गरवी गुजरात

RNI No. GUJHIN/2011/39228

GARVI GUJARAT

गरवी गुजरात

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 15
अंक : 305
दि. 09.03.2026,
सोमवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

टी20 विश्व कप में भारत का जलवा, न्यूजीलैंड को 96 रन से हराकर लगातार दूसरी बार बना चैंपियन

(जीएनएस)। अहमदाबाद। भारतीय क्रिकेट टीम ने आईसीसी मेन्स टी20 विश्व कप 2026 का खिताब जीतकर इतिहास रच दिया। अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए फाइनल मुकाबले में भारत ने न्यूजीलैंड को 96 रन से करारी शिकस्त देकर लगातार दूसरी बार टी20 विश्व कप अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ ही भारत टी20 विश्व कप के इतिहास में तीन बार खिताब जीतने वाली पहली टीम बन गया। कप्तान सूर्यकुमार यादव की अगुआई में टीम इंडिया ने न केवल ट्रॉफी का सफलतापूर्वक बचाव किया, बल्कि विश्व क्रिकेट में अपनी बादशाहत भी एक बार फिर साबित कर दी।

फाइनल मुकाबले में न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया, लेकिन भारतीय बल्लेबाजों ने आक्रामक अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए कीवी गेंदबाजों की रणनीति को पूरी तरह विफल कर दिया। भारत ने निर्धारित 20 ओवर में 255 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया, जो टी20 विश्व कप फाइनल के इतिहास का अब तक का सबसे बड़ा स्कोर बन गया। जवाब में लक्ष्य का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड की टीम भारतीय गेंदबाजों के सामने टिक नहीं सकी और पूरी टीम 159 रन पर सिमट गई।

भारत की ओर से विकेटकीपर बल्लेबाज संजू सैमसन ने शानदार पारी खेलते हुए 46 गेंदों में 89 रन बनाए और टीम की मजबूत नींव रखी। सैमसन की पारी में कई आकर्षक चौके और छक्के शामिल रहे। उन्होंने पूरे टूर्नामेंट में शानदार फॉर्म बरकरार रखते हुए लगातार तीसरा अर्धशतक भी जड़ा। उनके अलावा युवा बल्लेबाज अभिषेक शर्मा ने तूफानी अंदाज में बल्लेबाजी करते हुए मात्र 21 गेंदों में 52 रन बनाए और न्यूजीलैंड के गेंदबाजों पर दबाव बढ़ा दिया। ईशान किशन ने भी तेजतर्रार बल्लेबाजी करते हुए 23 गेंदों में 54 रन की पारी खेली।

पारी के अंतिम ओवरों में शिवम दुबे ने विस्फोटक बल्लेबाजी करते हुए केवल 8 गेंदों में 26 रन बना डाले, जिससे भारतीय स्कोर 255 रन तक पहुंच गया। न्यूजीलैंड की ओर से जेम्स नीशम सबसे सफल गेंदबाज रहे

और उन्होंने तीन विकेट हासिल किए, लेकिन भारतीय बल्लेबाजों की आक्रामकता के सामने उनका प्रयास भी टीम को राहत नहीं दिला सका।

256 रन के विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत बेहद खराब रही। भारतीय गेंदबाजों ने शुरू से ही दबाव बनाकर कीवी बल्लेबाजों को खुलकर खेलने का मौका नहीं दिया। अक्षर पटेल और जसप्रीत बुमराह ने अपनी सटीक और घातक गेंदबाजी से न्यूजीलैंड के शीर्ष क्रम को जल्दी ही झकझोर दिया। अक्षर पटेल ने फिन एलन और ग्लेन फिलिप्स को सस्ते में आउट किया, जबकि जसप्रीत बुमराह ने रचिन रवींद्र को पवेलियन भेजकर न्यूजीलैंड को बड़ा झटका दिया।

कुछ ही समय में न्यूजीलैंड की स्थिति बेहद खराब हो गई और 72 रन तक टीम के पांच विकेट गिर चुके थे। इसके बाद विकेटकीपर बल्लेबाज टिम सीफर्ट ने 52 रन बनाकर संघर्ष जरूर किया, लेकिन उन्हें दूसरे बल्लेबाजों का पर्याप्त साथ नहीं मिला। भारतीय गेंदबाजों ने लगातार दबाव बनाए रखा और अंततः पूरी न्यूजीलैंड टीम को 159 रन पर समेट दिया। जसप्रीत बुमराह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए तीन विकेट हासिल किए और भारत की जीत में अहम भूमिका निभाई।

इस ऐतिहासिक जीत के साथ भारतीय टीम ने कई बड़े रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिए। टी20 विश्व कप के इतिहास में पहली बार किसी टीम ने लगातार दो बार खिताब जीतने का कारनामा किया है और यह उपलब्धि भारत ने हासिल की। इसके अलावा भारत तीन बार टी20 विश्व कप जीतने वाली दुनिया की पहली टीम भी बन गया है।

टीम इंडिया ने एक और महत्वपूर्ण रिकॉर्ड अपने नाम किया। टी20 विश्व कप के इतिहास में इससे पहले कोई भी मेजबान टीम ट्रॉफी जीतने में सफल नहीं हुई थी, लेकिन भारत ने अपने ही देश में आयोजित इस टूर्नामेंट में चैंपियन बनकर इस रिकॉर्ड को भी तोड़ दिया। यह उपलब्धि भारतीय क्रिकेट इतिहास में एक नई मिसाल बन गई है।

भारत और न्यूजीलैंड के बीच टी20 विश्व कप में यह चौथा मुकाबला था। इससे पहले 2007, 2016 और 2021 में न्यूजीलैंड ने भारत को हराया था, लेकिन 2026 के फाइनल में जीत हासिल कर भारत ने यह रिकॉर्ड भी बदल दिया और पहली बार टी20 विश्व कप में न्यूजीलैंड को हराने में सफलता पाई।

न्यूजीलैंड का एक और रिकॉर्ड भी इस हार के साथ टूट गया। कीवी टीम ने अपने पहले दो आईसीसी खिताब—आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2000 और आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप 2021—भारत को हराकर जीते थे, लेकिन इस बार भारत ने शानदार प्रदर्शन करते हुए न्यूजीलैंड को पराजित कर उस सिलसिले को भी समाप्त कर दिया। इसके साथ ही न्यूजीलैंड दूसरी बार टी20 विश्व कप के फाइनल में पहुंचकर हारने वाली टीम बन गई।

यह जीत भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए इसलिए भी खास रही क्योंकि अहमदाबाद के इसी मैदान पर 2023 के वनडे विश्व कप फाइनल में टीम इंडिया को हार का सामना करना पड़ा था। उस दर्दनाक हार के बाद यही मैदान अब भारतीय टीम की ऐतिहासिक जीत का गवाह बना और करोड़ों भारतीय प्रशंसकों के लिए गर्व का क्षण लेकर आया।

भारतीय खिलाड़ियों के शानदार प्रदर्शन, कप्तान की बेहतरीन रणनीति और टीम की एकजुटता ने इस जीत को संभव बनाया। इस ऐतिहासिक उपलब्धि के साथ टीम इंडिया ने विश्व क्रिकेट में अपनी ताकत और श्रेष्ठता को एक बार फिर साबित कर दिया और देशभर में जश्न का माहौल छा गया।

सऊदी अरब के रिहायशी इलाके पर मिसाइल हमला, भारतीय समेत दो की मौत

(जीएनएस)। नई दिल्ली। मध्य पूर्व में लगातार बढ़ते तनाव के बीच सऊदी अरब के एक रिहायशी इलाके में रविवार को मिसाइल हमला होने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि 12 अन्य लोग घायल हो गए। मृतकों में एक भारतीय और एक बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं। यह घटना सऊदी अरब के अल-खारज शहर में उस समय हुई जब एक मिसाइल रखरखाव और सफाई कंपनी के आवासीय परिसर पर आकर गिरी। अचानक हुए इस हमले से पूरे इलाके में अफरा-तफरी मच गई और आसपास रहने वाले लोग दहशत में आ गए।

सऊदी नागरिक सुरक्षा विभाग के अनुसार मिसाइल गिरने से परिसर के कई हिस्सों को भारी नुकसान पहुंचा है। आवासीय इमारतों की दीवारें और खिड़कियां क्षतिग्रस्त हो गईं तथा परिसर के भीतर खड़े कई वाहनों को भी नुकसान पहुंचा। घटना के समय परिसर में बड़ी संख्या में कामगार मौजूद थे, जिसके कारण कई लोग घायल हो गए। हादसे के तुरंत बाद स्थानीय प्रशासन, नागरिक सुरक्षा विभाग और राहत-बचाव दल मौके पर पहुंच गए और घायलों को तुरंत नजदीकी अस्पतालों में भर्ती कराया गया।

सऊदी नागरिक सुरक्षा महानिदेशालय ने बताया कि घटना की सूचना मिलते ही आपातकालीन सेवाएं सक्रिय कर दी गईं। बचाव दल ने मौके पर पहुंचकर सबसे पहले घायल लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया और उन्हें अस्पताल भेजा। इसके बाद मलबे में फंसे लोगों को निकालने के लिए अभियान चलाया गया। अधिकारियों के अनुसार इस हमले में एक भारतीय और एक बांग्लादेशी नागरिक की मौत हो गई, जबकि घायल हुए सभी 12 लोग बांग्लादेश के नागरिक बताए गए हैं। घायलों का इलाज स्थानीय अस्पतालों में जारी है और कई लोगों की हालत गंभीर बताई जा रही है।

अधिकारियों ने अभी तक मृतकों की पहचान सार्वजनिक नहीं की है। बताया जा रहा है कि मृतक प्रवासी कामगार थे और कंपनी के आवासीय परिसर में ही रह रहे थे। इस घटना के बाद इलाके में सुरक्षा व्यवस्था और कड़ी कर दी गई है तथा पूरे क्षेत्र को सुरक्षा घेरे में ले लिया गया है। सुरक्षा एजेंसियां यह पता लगाने में जुटी हैं कि मिसाइल कहां से दागी गई और इसका लक्ष्य क्या था। अल-खारज शहर सऊदी अरब की राजधानी रियाद के दक्षिण में स्थित एक महत्वपूर्ण औद्योगिक क्षेत्र है, जहां बड़ी संख्या में विदेशी कामगार विभिन्न कंपनियों में काम करते हैं। इन कामगारों के लिए बनाए गए आवासीय परिसरों में ही यह मिसाइल गिरने की घटना हुई है। इस कारण प्रवासी कामगारों के बीच भय और चिंता का माहौल बन गया है। कई लोगों ने अपने परिवारों से संपर्क कर उन्हें सुरक्षित होने की जानकारी दी। मध्य पूर्व में हाल के दिनों में बढ़ते क्षेत्रीय तनाव के कारण सुरक्षा को लेकर चिंताएं लगातार बढ़ती जा रही हैं। विभिन्न देशों के बीच तनावपूर्ण हालात और सैन्य गतिविधियों में वृद्धि के कारण इस क्षेत्र में ऐसे हमलों की आशंका भी बढ़ गई है। हालांकि अभी तक इस मिसाइल हमले की जिम्मेदारी किसी भी संगठन या देश ने नहीं ली है, लेकिन सुरक्षा एजेंसियां हर संभावित पहलू की जांच कर रही हैं। इस घटना के बाद रियाद स्थित भारतीय दूतावास ने सऊदी अरब में रह रहे भारतीय नागरिकों के लिए एक एडवाइजरी जारी की है। दूतावास ने भारतीय नागरिकों से सतर्क रहने और स्थानीय प्रशासन द्वारा जारी सभी सुरक्षा निर्देशों का पालन करने की अपील की है। साथ ही यह भी कहा गया है कि भारतीय नागरिक अनावश्यक रूप से भीड़भाड़ वाले क्षेत्रों में जाने से बचें और किसी भी संदिग्ध गतिविधि की जानकारी तुरंत स्थानीय अधिकारियों को दें। भारतीय दूतावास ने अपने बयान में कहा कि मौजूदा परिस्थितियों को देखते हुए सभी भारतीय नागरिकों को सावधानी बरतनी चाहिए और सुरक्षा से संबंधित सभी दिशानिर्देशों का पालन करना चाहिए।

मुंबई के प्रमुख अस्पताल को बम से उड़ाने की धमकी, पुलिस की सघन तलाशी में कुछ नहीं मिला

(जीएनएस)। मुंबई। देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में रविवार को उस समय हड़कंप मच गया जब एक प्रमुख अस्पताल को ईमेल के जरिए बम से उड़ाने की धमकी दी गई। इस धमकी में रविवार शाम 4 बजे अस्पताल में विस्फोट करने की चेतावनी दी गई थी। सूचना मिलते ही अस्पताल प्रशासन और सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गईं। हालांकि मुंबई पुलिस की तत्परता और बम निरोधक दस्ते की गहन जांच के बाद अस्पताल परिसर में कोई भी विस्फोटक या संदिग्ध वस्तु नहीं मिली, जिससे बड़ी घटना टल गई। पुलिस के अनुसार अस्पताल प्रशासन को यह धमकी भरा ईमेल शनिवार रात करीब 11 बजे प्राप्त हुआ था। ईमेल में स्पष्ट रूप से लिखा गया था कि अगले दिन यानी रविवार शाम 4 बजे अस्पताल को बम से उड़ा दिया जाएगा। इस संदेश को देखते ही अस्पताल प्रशासन में अफरा-तफरी मच गई और तत्काल इसकी सूचना मुंबई पुलिस को दी गई। मामले की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने तुरंत सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी और जांच शुरू कर दी। धमकी की खबर धीरे-धीरे अस्पताल परिसर में फैल गई, जिसके बाद वहां मौजूद मरीजों, उनके परिजनों और अस्पताल के कर्मचारियों में दहशत का माहौल बन गया। कई लोग भय और चिंता के कारण अस्पताल से बाहर निकलने लगे, जबकि कुछ मरीजों के परिजन स्थिति को लेकर काफी घबराए हुए दिखाई दिए। हालांकि पुलिस और अस्पताल प्रशासन ने लोगों को शांत रहने की अपील की और भरोसा दिलाया कि सुरक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जा रहे हैं।

सूचना मिलते ही मुंबई पुलिस का बम डिटेक्शन एंड डिस्पोजल स्क्वॉड (BDDS) मौके पर पहुंच गया। इसके साथ ही खोजी कुत्तों की टीम और अन्य सुरक्षा एजेंसियों को भी जांच के लिए तैनात किया गया। बम निरोधक दस्ते ने आधुनिक उपकरणों की मदद से अस्पताल की हर मंजिल, वार्ड, ऑपरेशन थिएटर, पार्किंग क्षेत्र और आसपास के इलाकों की बारीकी से तलाशी ली। कई घंटों तक चली इस जांच के दौरान हर संभावित स्थान की सावधानीपूर्वक जांच की गई ताकि किसी भी तरह के खतरे की संभावना को पूरी तरह खत्म किया जा सके।

पुलिस अधिकारियों के अनुसार तलाशी अभियान के दौरान अस्पताल परिसर से कोई भी विस्फोटक सामग्री या संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई। इसके बाद यह स्पष्ट हो गया कि यह धमकी फर्जी थी। हालांकि पुलिस इस मामले को हल्के में नहीं ले रही है और धमकी देने वाले व्यक्ति या समूह की पहचान करने के लिए जांच जारी है।

मुंबई पुलिस के साइबर विभाग को इस मामले की जांच की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अधिकारी उस आईपी एड्रेस को ट्रेस करने में जुटे हैं, जिससे यह धमकी भरा ईमेल भेजा गया था। इसके अलावा ईमेल के तकनीकी विवरण की भी जांच की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि यह संदेश किस स्थान से और किस उद्देश्य से भेजा गया था।

पुलिस अधिकारियों का कहना है कि इस तरह की फर्जी धमकियां न केवल लोगों में डर और भ्रम पैदा करती हैं बल्कि सुरक्षा एजेंसियों के समय और संसाधनों की भी बर्बादी करती हैं। इसलिए यदि जांच में दोषी व्यक्ति की पहचान हो जाती है तो उसके खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

इस घटना ने एक और महत्वपूर्ण पहलू की ओर ध्यान खींचा है। हाल के दिनों में देश के विभिन्न शहरों में ईमेल के माध्यम से बम धमकी देने की घटनाएं सामने आई हैं। इसी सप्ताह हैदराबाद के मौसम केंद्र को भी इसी तरह ईमेल के जरिए बम से उड़ाने की धमकी दी गई थी। उस मामले में भी जांच के बाद धमकी फर्जी साबित हुई थी।

पुलिस अब यह जांच कर रही है कि क्या मुंबई और हैदराबाद की इन घटनाओं के बीच कोई संबंध है। यह भी संभावना जताई जा रही है कि इन धमकियों के पीछे कोई शरारती तत्व या संगठित गिरोह हो सकता है, जो इंटरनेट के माध्यम से विभिन्न संस्थानों को निशाना बनाकर दहशत फैलाने की कोशिश कर रहा है। फिलहाल अस्पताल परिसर में सुरक्षा व्यवस्था सामान्य कर दी गई है, लेकिन एहतियात के तौर पर पुलिस की निगरानी बढ़ा दी गई है। अस्पताल प्रशासन ने भी मरीजों और उनके परिजनों को आश्वस्त किया है कि उनकी सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता है और भविष्य में ऐसी किसी भी स्थिति से निपटने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। इस घटना के बाद एक बार फिर यह सवाल उठने लगा है कि डिजिटल माध्यमों के जरिए भेजी जाने वाली धमकियों से निपटने के लिए साइबर सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत बनाने की आवश्यकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि ऐसे मामलों में तकनीकी जांच और निगरानी को और अधिक प्रभावी बनाना जरूरी है ताकि इस तरह की घटनाओं को समय रहते रोका जा सके। हालांकि मुंबई पुलिस और सुरक्षा एजेंसियों की त्वरित कार्रवाई के कारण इस बार कोई भी अनहोनी नहीं हुई, लेकिन इस घटना ने यह स्पष्ट कर दिया है कि सुरक्षा के प्रति सतर्कता और त्वरित प्रतिक्रिया कितनी महत्वपूर्ण है।

बांसवाड़ा के बडोदिया गांव में होली से पहले आधी रात को दो बच्चों के प्रतीकात्मक विवाह की 500 साल पुरानी परंपरा

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत। राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के बडोदिया गांव के मुखिया बताते हैं कि 90 साल पहले बारिश न होने के कारण इस परंपरा का पालन नहीं किया गया था। इसी वजह से उस साल गांव में सूखा पड़ा और 200 से अधिक दुधारू पशु अचानक मर गए। इसके बाद से ही ग्रामीणों ने इस परंपरा को कभी न चूकने देने का ध्यान रखना शुरू किया है।

शून्य त्रुटि विज्ञापन

यह पुरानी परंपरा क्या है? राजस्थान के बांसवाड़ा में 500 साल पुरानी एक भयावह परंपरा आज भी जारी है। जहां होली से एक रात पहले आधी रात को दो मासूम बच्चों की शादी कर दी जाती है, और इसी क्रम में इस होली की रात भी आधी रात को दो मासूम बच्चों की शादी कर दी गई।

गांव वालों का मानना है कि अगर यह शादी नहीं हुई तो गांव की खेर जाति पर लगा 500 साल पुराना श्राप सच हो जाएगा। उस श्राप के चलते एक दशक पहले सैकड़ों जानवरों की जान चली गई थी। बडोदिया नाम के एक गांव में होली की पूर्व संध्या पर अगर यह परंपरा नहीं निभाई गई तो लोगों को आज भी डर है कि श्राप सच हो जाएगा। इस बार भी गांव के मुखिया नाथजी पटेल ने चुन्नू और मुन्नू नाम के दो किशोरों की शादी करवाई। जब उन्हें रात 1 बजे नींद से जगाकर शादी के मंडप में लाया गया तो चुन्नू और मुन्नू दोनों ने दूल्हा बनने की जिद की।

हालांकि, विवाह समारोह का आयोजन पंचो और स्वामी महाराज ने किया था, जिन्होंने बताया कि चुन्नू को दूल्हा और मुन्नू को दुल्हन बनाया गया था। अंत में, वैदिक मंत्रों के उच्चारण के साथ सिंदूर लगाने और मंगलसूत्र पहनाने की रस्म भी संपन्न की गई। इस प्रकार, भले ही विवाह समारोह सही हो, लेकिन यह विवाह वैध नहीं माना जाता।

इस बार सामाजिक सुधार के लिए, लोगों ने गुटखा, बीड़ी, सिगरेट और तंबाकू उत्पादों से मुक्ति पाने की इच्छा व्यक्त की और उन्हें विवाह वेदी की अग्नि में फेंक दिया।

2025 में 129 पत्रकारों की हत्या, सीपीजे की रिपोर्ट में 86 मौतों के लिए इज़राइल को जिम्मेदार ठहराया गया है

(छगनलाल मेवाड़ा द्वारा) सूरत।

विश्वभर में सशस्त्र संघर्ष ऐतिहासिक स्तर पर पहुँच रहे हैं, और पत्रकारों की हत्याओं की संख्या ने भी सभी पिछले रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं। न्यूयॉर्क स्थित कमेटी टू प्रोटेक्ट जर्नलिस्ट्स (सीपीजे) की एक हालिया रिपोर्ट के अनुसार, वर्ष 2025 में कुल 129 पत्रकारों और मीडियाकर्मियों ने अपनी जान गंवाई। चौंकाने वाली बात यह है कि इनमें से दो-तिहाई मौतों, यानी 86 पत्रकारों की मौत के लिए अकेले इज़राइल ज़िम्मेदार है। पिछले तीन दशकों से रिकॉर्ड रखने वाले इस संगठन ने पिछले वर्ष को पत्रकारों के लिए सबसे घातक वर्ष बताया है। रिपोर्ट के अनुसार, इज़राइल ने विशेष रूप से फ़िलिस्तीनी पत्रकारों को निशाना बनाया है। कुल 86 मौतों में से 60% से अधिक पत्रकार गाज़ा में रिपोर्टिंग कर रहे थे। सीपीजे ने कहा है कि युद्ध में रिपोर्टिंग करना खतरनाक होता है। लेकिन इज़राइल ने जानबूझकर और अवैध रूप से पत्रकारों को निशाना बनाने का एक नया तरीका अपना लिया है।

शून्य त्रुटि एजेंसी

इसके अलावा, सीपीजे ने उन 129 मामलों में से 47 मामलों का दस्तावेजीकरण किया है जिनमें पत्रकारों को उनके काम के कारण मार दिया गया था। 2023 में, ड्रोन हमलों में केवल दो पत्रकार मारे गए थे, जो 2025 में बढ़कर 39 हो गए। इन 39 ड्रोन हमलों में से 28 के लिए इजरायली सेना जिम्मेदार थी। इसके अलावा, रूस, सूडान और तुर्की द्वारा किए गए ड्रोन हमलों में भी अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों ने अपनी जान गंवाई है।

सीपीजे की सीईओ जोडी गिन्सबर्ग ने कहा, "मीडिया पर हमले अन्य स्वतंत्रताओं पर हमलों का एक लक्षण हैं। जब पत्रकारों को रिपोर्टिंग के लिए मार दिया जाता है, तो हम सभी खतरे में पड़ जाते हैं।" पत्रकार न केवल युद्धग्रस्त क्षेत्रों में बल्कि लोकतांत्रिक देशों में भी सुरक्षित नहीं हैं। यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि भारत में भ्रष्टाचार की जांच कर रहे स्वतंत्र पत्रकार मुकेश चंद्रकार का शव एक सेप्टिक टैंक में मिला था।

मेक्सिको में छह और फिलीपींस में तीन पत्रकारों की गोली मारकर हत्या कर दी गई। इसके अलावा, जाने-माने स्तंभकार तुर्की अल-जशर को सऊदी अरब ने देशद्रोह के आरोप में फांसी दे दी। रिपोर्ट के अनुसार, पिछले दस वर्षों से भारत और मैक्सिको में हर साल कम से कम एक पत्रकार की हत्या हुई है। इसलिए, रिपोर्ट इस चेतावनी के साथ समाप्त होती है कि प्रेस की स्वतंत्रता में गिरावट लोकतंत्र के पतन की शुरुआत है।

गरवी गुजरात
हिन्दी

JioTV
CHENNAL NO.
2002

Jio Air Fiber
Jio Tv +
Jio Fiber
Daily Hunt
ebaba Tv
Dish Plus
DTH live OTT
Rock TV
Airtel
Amezone Fire
Rocu Tv-US.UK

देश-दुनिया के नवीनतम समाचार
प्राप्त करने के लिए आज ही
गरवी गुजरात हिंदी चेनल देखिये

संपादकीय

वैश्विक शक्ति, युद्ध और शांति की विडंबना

आज की दुनिया में जब भी किसी बड़े संघर्ष या युद्ध की आशंका पैदा होती है, तो सबसे पहले जिस देश का नाम चर्चा में आता है, वह है अमेरिका। कई लोग व्यंग्य में उसे "दुनिया का थानेदार" भी कहते हैं। यह उपमा यूं ही नहीं दी गई है। पिछले कई दशकों में अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अमेरिका की भूमिका ऐसी रही है कि वह कई बार खुद को वैश्विक व्यवस्था का संरक्षक बताता है, लेकिन उसी प्रक्रिया में कई बार उसके कदमों पर सवाल भी उठते हैं। शक्ति, सुरक्षा, लोकतंत्र और राष्ट्रीय हितों के नाम पर लिए गए उसके फैसले अक्सर दुनिया की राजनीति को नई दिशा देते हैं, लेकिन साथ ही विवाद भी पैदा करते हैं। यही कारण है कि जब भी युद्ध की कोई आहट सुनाई देती है, तो दुनिया की निगाहें अनायास ही अमेरिका की ओर उठ जाती हैं। इतिहास के पन्नों को पलटकर देखें तो यह स्पष्ट हो जाता है कि महाशक्तियों का उदय केवल आर्थिक समृद्धि या तकनीकी प्रगति से नहीं होता। इसके पीछे सैन्य शक्ति, राजनीतिक प्रभाव और वैश्विक रणनीति का भी बड़ा योगदान होता है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जब अमेरिका एक प्रमुख महाशक्ति के रूप में उभरा, तब से उसने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में निर्णायक भूमिका निभानी शुरू कर दी। संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं के गठन से लेकर वैश्विक सुरक्षा ढांचे के निर्माण तक, कई क्षेत्रों में उसकी सक्रियता दिखाई दी। लेकिन इसी के साथ दुनिया के कई हिस्सों में उसकी सैन्य उपस्थिति और हस्तक्षेप भी बढ़ते गए, जिसने उसे एक ऐसे देश के रूप में स्थापित कर दिया जो केवल दर्शक नहीं, बल्कि घटनाओं का सक्रिय खिलाड़ी है। अमेरिका की विदेश नीति को लेकर अक्सर दो तरह की धारणा सामने आती है। एक धारणा यह कहती है कि अमेरिका दुनिया में लोकतंत्र, मानवाधिकार और स्थिरता को बनाए रखने के लिए कदम उठाता है। दूसरी धारणा यह मानती है कि उसके अधिकांश कदम उसके अपने आर्थिक और रणनीतिक हितों से प्रेरित होते हैं। सच्चाई शायद इन दोनों के बीच कहीं स्थित है। कई बार यह देखा गया है कि जिन क्षेत्रों में उसके हित सीधे जुड़े होते हैं, वहां उसकी सक्रियता अधिक दिखाई देती है, जबकि अन्य क्षेत्रों में वह अपेक्षाकृत शांत रहता है। इस पूरे परिदृश्य को समझने के लिए युद्ध और शांति की अवधारणाओं को भी समझना जरूरी है। भारतीय परंपरा में युद्ध को कभी भी पहला विकल्प नहीं माना गया। भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को युद्ध करने का उपदेश जरूर दिया, लेकिन उससे पहले शांति स्थापित करने के अनेक प्रयास किए गए थे। संवाद, समझौता और न्यायपूर्ण समाधान की संभावनाओं को पूरी तरह आजमाने के बाद ही युद्ध को अंतिम उपाय के रूप में स्वीकार किया गया। इसलिए भारतीय विचारधारा में युद्ध को धर्म का साधन तभी माना गया जब अन्य सभी मार्ग बंद हो जाएं।

आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति में अक्सर यह संतुलन दिखाई नहीं देता। कई बार युद्ध की संभावना इतनी जल्दी सामने आ जाती है कि ऐसा लगता है मानो संवाद और कूटनीति को पर्याप्त समय ही नहीं दिया गया। इसी वजह से वैश्विक स्तर पर यह बहस चलती रहती है कि क्या महाशक्तियां वास्तव में शांति स्थापित करना चाहती हैं या फिर शक्ति संतुलन बनाए रखने के लिए संघर्ष को भी एक साधन के रूप में इस्तेमाल करती हैं। भारत की विदेश नीति का इतिहास इस संदर्भ में अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने गुटनिरपेक्षता और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति अपनाई। उस समय देश के नेताओं का मानना था कि युद्ध और टकराव की राजनीति से दूर रहकर भी अंतरराष्ट्रीय मंच पर सम्मानजनक स्थान प्राप्त किया जा सकता है। इसी सोच के कारण भारत ने कई बार मध्यस्थता और संवाद की भूमिका निभाने की कोशिश की। हालांकि समय के साथ वैश्विक परिस्थितियों और सुरक्षा चुनौतियों के कारण भारत की रणनीति में भी परिवर्तन आया है। अब भारत शांति और कूटनीति के साथ-साथ अपनी सुरक्षा और संप्रभुता की रक्षा के लिए सख्त कदम उठाने में भी संकोच नहीं करता।

फिर भी भारतीय सभ्यता की मूल भावना अहिंसा, करुणा और संतुलन से जुड़ी हुई है। गौतम बुद्ध से लेकर महात्मा गांधी तक, भारतीय विचारधारा ने हमेशा शांति को प्राथमिकता दी है। यही कारण है कि आज भी भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर संवाद और सहयोग की आवश्यकता पर जोर देता है। वह यह मानता है कि स्थायी शांति केवल सैन्य शक्ति से नहीं, बल्कि विश्वास और साझेदारी से स्थापित की जा सकती है।

न्याय निष्पक्षता के महत्व की रक्षा हो

> "न्यायपालिका के प्रति पूरा सम्मान रखने के बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि न्याय-व्यवस्था से जुड़े व्यक्ति भी उसी समाज से आते हैं जिसका हम सब हिस्सा हैं। यह कौन कह सकता है कि हमारा समाज शत-प्रतिशत ईमानदार है?

अब यह बात पुरानी नहीं बल्कि बहुत पुरानी लगती है। सातवीं या आठवीं कक्षा में पढ़ता था मैं। सामूहिक गीत गवाये जाने की प्रथा थी तब स्कूल में। दो ऐसे गीतों की पंक्तियां मुझे आज, सत्तर-पचहत्तर साल बाद, भी याद हैं, अच्छी लगती थीं मुझे यह पंक्तियां। एक कविता में नया ज़माना लाने की बात कही गयी थी– 'दे वरदान हमें माता हम निकले आन निभाने को... जहां बेटियां बिकती हैं, बेटों का मोल किया जाता... ऐसे समाज के ढांचे की हम निकले नींव हिलाने को...' और एक कविता थी– 'मेरा देश कि जिसकी मिट्टी सोना उगले, और जहां की भूखी जनता मिट्टी निगले... न्याय दास है यहां करेंसी के नोटों का, शासन भिखमंगा है जनता के वोटों का...।'

आज न्यायपालिका में भ्रष्टाचार के आरोपों को लेकर देश में एक विवाद-सा चल रहा है। हुआ यह है कि राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) की आठवीं कक्षा की एक पुस्तक में देश की न्यायपालिका में भ्रष्टाचार शीर्षक से एक पाठ शामिल किया गया था। उच्चतम न्यायालय ने इस पर आपत्ति उठायी है। उन्हें लग रहा है कि आठवीं कक्षा के बच्चों को यह सब बताने से उनके कोमल मस्तिष्क पर गलत प्रभाव पड़ सकता है। न्यायपालिका के बारे में उनके मन में गलत अवधारणा बन सकती है। तर्क यह दिया जा रहा है कि आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले बालक की बुद्धि इतनी परिपक्व नहीं होती कि वह मुद्दे की गहराई को समझ सके। न्यायालय ने आठवीं कक्षा की इस पुस्तक को प्रतिबंधित कर दिया है और एनसीईआरटी ने भी अपनी 'ग़लती' के लिए क्षमा मांग कर पुस्तक की बिक्री पर रोक लगा दी है। मैंने पुस्तक का यह

विवादास्पद अध्याय नहीं पढ़ा है, पर इसके बारे में जितना कुछ मीडिया में आया है उसे देखते हुए यह अनुमान लगाना गलत नहीं होगा कि उच्चतम न्यायालय को यह आशंका है कि न्यायपालिका में भ्रष्टाचार के बारे में दी गयी जानकारी से आठवीं में पढ़ने वाले बालक की बाल-बुद्धि पर गलत प्रभाव पड़ेगा। जब बाल-बुद्धि वाली यह बात मैंने पढ़ी तो अनायास मुझे वे दो कविताएं याद आ गयीं, जिनकी चर्चा आलेख के प्रारंभ में की गयी है। मैं सोच रहा हूं कि क्या सचमुच इन कविताओं को पढ़कर मेरे मन में 'जर्जर समाज' या 'करेंसी नोटों की दास न्यायपालिका' के बारे में कोई ऐसी धारणा बन गयी थी जिसे ग़लत कहा या समझा जा रहा है? सच कहूं तो आठवीं कक्षा की अपनी पढ़ाई के दौरान और आज उसके लगभग सत्तर साल बाद भी, और उस कविता को पसंद करने के बावजूद, न्यायपालिका के महत्व को मैंने कभी कम नहीं आंका, और न ही कभी मुझे ऐसा लगा कि न्यायपालिका के बारे में मेरे मन में सम्मान कहीं कम हुआ है।

जिन चार स्तंभों पर हमारा जनतंत्र टिका है, उनमें संभवतः सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ है हमारी न्यायपालिका और आरोपों और अपवादों के बावजूद आज भी न्यायपालिका पर देश का भरोसा कम नहीं हुआ है। न्यायपालिका की कार्यप्रणाली और उसकी निष्पक्षता को लेकर सवाल भले ही उठते रहे हों, पर इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि कुल मिलाकर हमारी न्यायपालिका देश की जनता को एक भरोसा देती है। यह भरोसा बना रहे शायद यही मंशा रही होगी उच्चतम न्यायालय की जब उसने एनसीईआरटी की आठवीं कक्षा की किताब के एक अध्याय पर सवालिया निशान लगाया। ऐसा नहीं है कि एनसीईआरटी की किताबों पर पहले कभी सवाल नहीं उठे। कई बार हुआ है ऐसा। कई बार इन किताबों में शामिल सामग्री विवादों के घेरे में आयी है। छोटी कक्षाओं में पढ़ाई जाने वाली यह किताबें हमारी भावी पीढ़ी का निर्माण करती हैं। इनकी निष्पक्षता और इनके महत्व की रक्षा होनी ही चाहिए। पर जहां तक न्यायपालिका के सम्मान और प्रतिष्ठा का सवाल है, इससे कोई समझौता नहीं किया जा सकता। न्यायपालिका के प्रति पूरा सम्मान रखने के बावजूद इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता कि न्याय-व्यवस्था से जुड़े व्यक्ति भी उसी समाज से आते हैं जिसका हम सब हिस्सा हैं। यह कौन कह सकता है कि हमारा समाज शत-प्रतिशत ईमानदार है?

कचरा यदि कहीं है तो उसे कार्पेट के नीचे छुपा देने से सफाई नहीं हो जाती। कचरे के अस्तित्व को स्वीकार करना होगा, तभी सफाई की आशा की जा सकती है। हमारे न्यायालय में विभिन्न स्तरों पर लाखों मामले लंबित पड़े हैं। हमें स्वीकार करना होगा कि न्याय मिलने में देरी का मतलब न्याय न मिलना ही होता है। हकीकत यह भी है कि ऐसे मामलों की संख्या घटने के बजाय लगातार बढ़ती ही जा रही है। न्यायपालिका को स्वयं सोचना होगा कि यह कैसे सुधरे। रहा सवाल कुछ न्यायाधीशों पर भ्रष्टाचार के आरोपों का, तो हमें यह स्वीकारना होगा कि कुछ स्तरों पर खामियां हैं, भ्रष्टाचार है। लोकसभा में रखे गये आंकड़ों के अनुसार पिछले एक दशक में यानी सन् 2016 से सन् 2025 तक मौजूदा न्यायाधीशों के खिलाफ 8600 से अधिक शिकायत दर्ज की गयी हैं। इन शिकायतों में दिल्ली उच्च न्यायालय के न्यायाधीश यशवंत वर्मा के घर से मिली भारी मात्रा में नकदी का मामला शामिल है। अदालत में जनता का विश्वास बना रहे, इसके लिए ज़रूरी है कि ऐसे मामलों का निपटारा जल्दी से जल्दी हो। भ्रष्टाचार का मतलब सिर्फ नकद रिश्वत ही नहीं होता। मनवांछित निर्णय पाने के लिए राजनीतिक दबाव भी भ्रष्टाचार की श्रेणी में ही आता है। उच्च अदालतों में मामले अपने मनचाहे न्यायाधीशों के समक्ष ही आयें, इसके लिए होने वाली कोशिशें भी इसी श्रेणी में आती हैं। सिर्फ न्याय होना ही पर्याप्त नहीं होता, न्याय होते हुए दिखना भी चाहिए। यहां एक और आंकड़ा भी मुद्दे की गंभीरता को समझने में मदद कर सकता है। सन् 2007 में जारी 'ग्लोबल करप्शन रिपोर्ट' के अनुसार भारत में किए गये जनमत-सर्वेक्षण में 77 प्रतिशत लोगों ने न्याय व्यवस्था पर अविश्वास जताया था। इस बात की आशा की जानी चाहिए कि आज यह स्थिति बेहतर होगी, और यह भी संभव है कि विश्व में भ्रष्टाचार की तुलना में हमारी स्थिति बेहतर हो, पर इस आंकड़े से यह संकेत तो लिया ही जाना चाहिए कि देश की जनता न्याय-व्यवस्था में कदाचार की स्थिति से अवगत भी है और चिंतित भी। यह संभव है कि आठवीं कक्षा में पढ़ने वाले बच्चों की बाल-बुद्धि भ्रष्टाचार के मामले की गंभीरता को न समझे, या फिर कुछ ग़लत निष्कर्ष भी निकाल ले। पर इससे स्थिति की गंभीरता कम नहीं होती कि हमारी न्याय-व्यवस्था में कहीं कुछ बहुत बड़ी खामी घुसपैठ करती दिख रही है। यदि आठवीं कक्षा में मेरी पीढ़ी न्याय की करेंसी के नोटों का दास वाली बात कुछ-कुछ समझ सकती है तो आज की पीढ़ी तो कहीं अधिक समझदार है। इंटरनेट और कृत्रिम मेधा वाले समय में बच्चों से कुछ छिपाकर नहीं, बच्चों को बहुत कुछ बताकर ही उनके साथ न्याय किया जा सकता है। एनसीईआरटी की किताब में बच्चों को क्या बताया गया है, पता नहीं, पर इतना अवश्य पता है कि भरी दोपहर में आंख बंद कर लेने से रोशनी अंधेरे में नहीं बदल जाती। सवाल सच को जानने और उसके अनुरूप आवश्यक कार्रवाई के लिए स्वयं को तैयार करने का है।

प्रेरणा

आत्मानुभूति का मार्ग: ध्यान, भक्ति और योग से ईश्वर की खोज

मानव जीवन के आरंभ से ही मनुष्य के मन में कुछ ऐसे प्रश्न रहे हैं, जो उसे निरंतर सोचने और खोज करने के लिए प्रेरित करते हैं। इन प्रश्नों में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है—ईश्वर कौन है, कहां है, कैसा है और उसे कैसे पाया जा सकता है। यह ऐसे प्रश्न हैं जिनका कोई एक सीधा और सार्वभौमिक उत्तर शायद कभी नहीं मिल सकता। फिर भी मानव सभ्यता के लंबे इतिहास में हमारे ऋषि-मुनियों, तपस्वियों और संतों ने अपने ज्ञान, अनुभव और साधना के आधार पर इन प्रश्नों का समाधान खोजने की निरंतर कोशिश की है। उन्होंने जीवन के गहरे चिंतन और तपस्या के माध्यम से ईश्वर के स्वरूप और उसकी प्राप्ति के मार्ग के बारे में अनेक विचार प्रस्तुत किए, जो आज भी हमारे आध्यात्मिक जीवन का आधार बने हुए हैं। सनातन धर्म की विशेषता यह है कि इसमें विचारों की व्यापकता और विविधता को स्वीकार किया गया है। यहां ईश्वर के स्वरूप को लेकर एक ही मत नहीं है, बल्कि अनेक दृष्टिकोण देखने को मिलते हैं। कुछ परंपराएं ईश्वर को साकार रूप में मानती हैं, जबकि कुछ उसे निराकार और सर्वव्यापी शक्ति के रूप में स्वीकार करती हैं। इसी प्रकार द्वैत और अद्वैत जैसे दर्शन भी ईश्वर के स्वरूप को अलग-अलग तरीके से समझाते हैं। द्वैत दर्शन में ईश्वर और जीव को अलग-अलग माना गया है, जबकि अद्वैत दर्शन के अनुसार जीव और ब्रह्म में कोई भेद नहीं है, दोनों एक ही परम सत्य के रूप हैं। इन भिन्न-भिन्न अवधारणाओं के बावजूद एक बात लगभग सभी मान्यताओं में समान है कि ईश्वर को केवल तर्क से नहीं, बल्कि अनुभव और आत्मानुभूति के माध्यम से जाना जा सकता है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में यह विचार बार-बार व्यक्त किया गया है कि ईश्वर कोई बाहरी वस्तु नहीं है जिसे केवल आंखों से देखा जा सके। वह एक ऐसी सत्ता है जो प्रकृति के कण-कण में विद्यमान है और हर जीव के भीतर भी उसी का अंश मौजूद है। इसलिए कहा जाता है कि ईश्वर निराकार भी है और साकार भी, वह आदि भी है और अनंत भी। इस दृष्टि से ईश्वर केवल मंदिरों या पूजा स्थलों तक सीमित नहीं है, बल्कि समस्त सृष्टि में उसका विस्तार है। जब मनुष्य इस सत्य को समझने लगता है, तो उसके भीतर ईश्वर की खोज का दृष्टिकोण भी बदलने लगता है।

संतों और महात्माओं ने हमेशा यह बताया है कि ईश्वर की प्राप्ति का सबसे महत्वपूर्ण माध्यम 'भाव' है। ईश्वर को पाने के लिए बाहरी आडंबरों से अधिक आवश्यक है मन की सच्ची भावना और समर्पण। इसी भाव को व्यक्त करते हुए कहा गया है कि भगवान भाव के भूखे होते हैं। अर्थात् यदि मन में सच्ची श्रद्धा और प्रेम हो, तो ईश्वर की अनुभूति संभव है। लेकिन यह भाव तभी जागृत हो सकता है जब मन शुद्ध और निर्मल हो। यदि मन विषय-वासना, लोभ, क्रोध, ईर्ष्या और अन्य विकारों से भरा रहेगा, तो उसमें ईश्वर के प्रति सच्चा भाव उत्पन्न होना कठिन हो जाता है। मन को निर्मल बनाने की आवश्यकता को हमारे धार्मिक ग्रंथों में भी स्पष्ट रूप से बताया गया है। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस में भगवान श्रीराम स्वयं कहते हैं—

"निश्चल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।"

इस दोहे का अर्थ यह है कि केवल वही व्यक्ति भगवान को प्राप्त कर सकता है जिसका मन स्थिर और निष्कपट हो। छल, कपट और स्वार्थ से भरा हुआ मन ईश्वर के समीप नहीं पहुंच सकता। इसीलिए आध्यात्मिक साधना का सबसे पहला लक्ष्य मन को शुद्ध और स्थिर बनाना माना गया है। लेकिन यहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि मन को स्थिर और नियंत्रित कैसे किया जाए। यह तो सभी जानते हैं कि मन अत्यंत चंचल होता है। वह हर क्षण किसी न किसी विचार, इच्छा या भावना में उलझा रहता है। कभी वह अतीत की स्मृतियों में भटकता है, तो कभी भविष्य की कल्पनाओं में। इस कारण मन को एकाग्र करना और उसे विकारों से मुक्त करना आसान कार्य नहीं है। यही कारण है कि हमारे ऋषि-मुनियों ने मन को नियंत्रित करने के लिए ध्यान, तपस्या, योग और एकाग्रता जैसे अनेक साधन बताए हैं। ध्यान को भारतीय आध्यात्मिक साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग माना गया है। ध्यान का अर्थ है अपने मन को बाहरी विषयों से हटाकर भीतर की ओर केंद्रित करना। जब मन धीरे-धीरे शांत होता है और विचारों की गति कम होने लगती है, तब व्यक्ति अपने भीतर एक गहरी शांति का अनुभव करता है। यही शांति धीरे-धीरे आत्मानुभूति का द्वार खोलती है। योग साधना भी इसी दिशा में एक महत्वपूर्ण साधन है। योग के माध्यम से शरीर, मन और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित किया जाता है। जब यह संतुलन बनता है, तो मनुष्य अपने भीतर स्थित दिव्यता को पहचानने लगता है।

संतों और महात्माओं का कहना है कि जब व्यक्ति नियमित रूप से ध्यान और योग का अभ्यास करता है, तो उसके मन के विकार धीरे-धीरे समाप्त होने लगते हैं। लोभ, क्रोध, ईर्ष्या और अहंकार जैसे भाव कमजोर पड़ने लगते हैं और मन में शांति तथा करुणा का भाव बढ़ने लगता है। यह परिवर्तन अचानक नहीं होता, बल्कि धीरे-धीरे साधना के माध्यम से विकसित होता है। लेकिन जब यह परिवर्तन होता है, तो मनुष्य के जीवन का दृष्टिकोण भी बदल जाता है। जैसे-जैसे मन पर नियंत्रण बढ़ता है, वैसे-वैसे व्यक्ति को अपने भीतर और आसपास ईश्वर की उपस्थिति का अनुभव होने लगता है। वह समझने लगता है कि ईश्वर कोई दूर बैठी हुई सत्ता नहीं है, बल्कि वह हमारे भीतर ही विद्यमान है। इस अनुभव के साथ जीवन में एक नई शांति और संतुलन का उदय होता है। व्यक्ति बाहरी परिस्थितियों से कम प्रभावित होता है और उसके भीतर एक स्थायी संतोष का भाव उत्पन्न होता है। ऋषि-मुनियों और संतों के अनुसार साधना की एक अवस्था ऐसी भी आती है जब मन पूरी तरह शांत और स्थिर हो जाता है। उस समय व्यक्ति अपने भीतर एक गहन निःशब्दता का अनुभव करता है। यह निःशब्दता केवल शब्दों की अनुपस्थिति नहीं होती, बल्कि एक ऐसी अवस्था होती है जिसमें मन के सभी विचार और भाव शांत हो जाते हैं। इस क्षण को ही ईश्वर की अनुभूति का क्षण कहा गया है। यही वह अवस्था है जहां व्यक्ति अपने वास्तविक स्वरूप को पहचानने लगता है।

इस प्रकार भारतीय आध्यात्मिक परंपरा यह सिखाती है कि ईश्वर की प्राप्ति किसी बाहरी खोज का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक यात्रा है।

हरियाली की तपस्या और आस्था का प्रतीक: जब आंगन में खड़ी हुई बारह फुट ऊंची तुलसी

शहरों की भागदौड़ भरी जिंदगी में जहां कंक्रीट के जंगल तेजी से फैलते जा रहे हैं और हरियाली धीरे-धीरे सिमटती जा रही है, वहां यदि किसी घर के बाहर सैकड़ों पौधों से सजी बगिया दिखाई दे जाए तो वह दृश्य मन को अनायास ही ठहरने पर मजबूर कर देता है। अक्सर लोग रुककर देखते हैं, पेड़ों-पौधों की हरियाली को निहारते हैं और उनमें लगे औषधीय पौधों के बारे में जिज्ञासा प्रकट करते हैं। ऐसा लगता है मानो प्रकृति के बीच कुछ क्षण बिताकर उन्हें भी शांति का अनुभव हो रहा हो। वास्तव में शहर के बीचों-बीच हरियाली का यह छोटा-सा संसार केवल पौधों का संग्रह नहीं, बल्कि प्रकृति के प्रति प्रेम, सेवा और धैर्य की जीवंत कहानी है।

अधिकांश सरकारी मकानों के बाहर बाग-बगीचे बहुत कम दिखाई देते हैं। आम तौर पर लोग यह सोचकर पौधे लगाने से बचते हैं कि घर स्थायी नहीं है, इसलिए मेहनत करने का क्या लाभ। लेकिन यदि किसी व्यक्ति के भीतर प्रकृति के प्रति सच्चा लगाव हो, तो वह स्थान का मोह नहीं देखता। इसी सोच के साथ हमने अपने सरकारी घर के बाहर की ऊबड़-खाबड़ और बंजर भूमि को हरियाली से भरने का संकल्प लिया। शुरुआत में वह जमीन बिल्कुल सूखी और अनगढ़ थी, जहां घास तक ठीक से नहीं उगती थी। धीरे-धीरे मिट्टी को तैयार किया गया, खाद डाली गई, पानी दिया गया और पौधों की देखभाल की गई। कुछ ही वर्षों में वही जमीन एक सुंदर बगीचे में बदल गई, जहां दो से ढाई हजार स्क्वायर फीट क्षेत्र में सैकड़ों फल-फूल और औषधीय पौधे लहलहाने लगे। अब यह बगिया राहगीरों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गई है।

इस बगीचे की सबसे बड़ी विशेषता और गौरव का विषय एक अद्भुत तुलसी का पौधा है, जिसने हर किसी को चकित कर दिया है। सामान्य तौर पर लोग अपने घरों में छोटी-सी तुलसी लगाते हैं, जो दो-तीन फुट तक ही बढ़ती है। लेकिन हमारी बगिया में खड़ी यह तुलसी लगभग बारह फुट ऊंची है। यह इतनी विशाल और सघन है कि पहली नजर में इसे देखकर लोग विश्वास ही नहीं कर पाते कि यह वास्तव में तुलसी का पौधा है। यह असाधारण तुलसी हमारे बगीचे की सबसे बड़ी धरोहर बन गई है। इसे वन तुलसी, अरण्य तुलसी, ब्रह्म तुलसी या कठेरक के नाम से भी जाना जाता है।

आमतौर पर लोग केवल रामा तुलसी और श्यामा तुलसी के बारे में ही जानते हैं, जो लगभग हर घर में दिखाई देती हैं। लेकिन यह विशेष प्रकार की तुलसी उससे बिल्कुल अलग है। इसकी बढ़ने की क्षमता बहुत अधिक होती है और यह हर मौसम में हरी-भरी रहती है। जहां सामान्य तुलसी ठंड के मौसम में पाले से प्रभावित होकर सूख जाती है, वहीं यह वन तुलसी पूरे वर्ष हरी और जीवंत बनी रहती है। इसकी ऊंचाई और घनत्व दोनों ही आश्चर्यचकित करने वाले हैं। ग्रीस में 10 फुट 12.5 इंच ऊंची तुलसी का नाम गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज है, लेकिन हमारी बगिया की यह तुलसी उससे भी बड़ी होकर लगभग बारह फुट की ऊंचाई तक पहुंच चुकी है। इतना ही नहीं, इसके आसपास पांच से ग्यारह फुट ऊंचाई तक बढ़ने वाली कई और तुलसी के पौधे भी लगातार विकसित हो रहे हैं।

तुलसी का महत्व केवल उसके आकार में नहीं, बल्कि उसके गुणों और आध्यात्मिक महत्व में भी निहित है। भारतीय संस्कृति में तुलसी को अत्यंत पवित्र माना गया है। लगभग हर हिंदू घर के आंगन में तुलसी का पौधा लगाया जाता है और उसे नियमित रूप से जल अर्पित कर पूजा की जाती है। तुलसी केवल एक पौधा नहीं, बल्कि आस्था, स्वास्थ्य और सकारात्मक ऊर्जा का प्रतीक है। माना जाता है कि जिस घर में तुलसी का वास होता है, वहां वातावरण शुद्ध और पवित्र बना रहता है। यह पौधा घर के आंगन को केवल हरियाली ही नहीं देता, बल्कि आध्यात्मिक संतुलन और मानसिक शांति भी प्रदान करता है।

आयुर्वेद में भी तुलसी का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। प्राचीन आयुर्वेदिक ग्रंथों में तुलसी को औषधीय गुणों का भंडार बताया गया है। चरक संहिता के अनुसार तुलसी हिचकी, खांसी, विष विकार और पसली के दर्द को दूर करने में सहायक होती है। यह शरीर में पित्त, कफ और वात को संतुलित करने का काम करती है, जिससे शरीर का प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। आयुर्वेदिक चिकित्सक तुलसी के पत्तों, बीजों और जड़ों का उपयोग कई प्रकार की औषधियों में करते हैं।

आयुर्वेद के प्रसिद्ध ग्रंथ भाव प्रकाश में भी तुलसी के अनेक लाभों का वर्णन मिलता है। इसके अनुसार तुलसी हृदय के लिए अत्यंत लाभकारी है और त्वचा संबंधी रोगों में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह पाचन शक्ति को बढ़ाने में सहायक होती है और मूत्र संबंधी विकारों को दूर करने में भी प्रभावी मानी जाती है। आज के आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान भी यह सिद्ध कर चुके हैं कि तुलसी में एंटीऑक्सीडेंट, एंटीबैक्टीरियल और एंटीवायरल गुण पाए जाते हैं, जो शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को मजबूत बनाने में मदद करते हैं।

तुलसी का धार्मिक और आध्यात्मिक महत्व भी कम नहीं है। पुराणों में उल्लेख मिलता है कि जहां तुलसी का पौधा होता है, वहां ब्रह्मा, विष्णु और महेश सहित सभी देवताओं का निवास माना जाता है। इसलिए भारतीय परंपरा में तुलसी के पौधे को अत्यंत श्रद्धा के साथ पूजा जाता है। सुबह-शाम तुलसी के सामने दीप जलाने की परंपरा भी इसी विश्वास से जुड़ी है कि इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है और वातावरण शुद्ध बना रहता है।

अभियान

चैत्र मास: नवआरंभ, प्रकृति के उल्लास और आध्यात्मिक ऊर्जा का प्रतीक

भारतीय संस्कृति में समय की गणना केवल दिनों और महीनों की साधारण व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह प्रकृति, ऋतुओं और आध्यात्मिक जीवन के साथ गहराई से जुड़ी हुई है। सनातन परंपरा में प्रत्येक माह का अपना विशेष महत्व माना गया है, जो केवल धार्मिक दृष्टि से ही नहीं बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और स्वास्थ्य संबंधी दृष्टि से भी महत्वपूर्ण होता है। इन्हीं महीनों में चैत्र मास को अत्यंत पवित्र और शुभ माना गया है। यह महीना नए वर्ष की शुरुआत का प्रतीक होने के साथ-साथ नवचेतना, नवउत्साह और आध्यात्मिक जागरण का भी संदेश देता है। चैत्र मास का आगमन मानो जीवन को एक नई दिशा देने और प्रकृति के साथ समरस होकर आगे बढ़ने का निमंत्रण है।

वैदिक पंचांग के अनुसार चैत्र वर्ष का पहला महीना होता है और इसकी शुरुआत चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होती है। यही दिन हिंदू नववर्ष के रूप में भी मनाया जाता है। खगोलीय दृष्टि से यह समय अत्यंत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि अमावस्या के बाद चंद्रमा मेष राशि में प्रवेश करता है और अश्विनी नक्षत्र से अपनी यात्रा आरंभ करता है। इसके बाद वह प्रतिदिन अपनी कलाओं में वृद्धि करता हुआ पूर्णिमा के दिन चित्रा नक्षत्र में पूर्णता को प्राप्त करता है। चंद्रमा के चित्रा नक्षत्र में स्थित होने के कारण ही इस महीने को चैत्र कहा जाता है। यह खगोलीय परिवर्तन केवल आकाशीय घटना नहीं है, बल्कि यह जीवन में बढ़ती ऊर्जा और प्रकाश का भी प्रतीक माना जाता है।

धार्मिक ग्रंथों और पुराणों में चैत्र मास को अत्यंत पुण्यदायी बताया गया है। मान्यता है कि इस समय किए गए जप, तप, व्रत, पूजा, दान और स्नान का फल कई गुना बढ़ जाता है। स्कंदपुराण में उल्लेख मिलता है कि जो व्यक्ति चैत्र मास में श्रद्धा और विश्वास के साथ स्नान और दान करता है, वह अपने पापों से मुक्त होकर भगवान विष्णु के लोक को प्राप्त करता है। इसीलिए इस महीने को आध्यात्मिक साधना और आत्मशुद्धि के लिए अत्यंत उपयुक्त माना गया है। इस समय मनुष्य अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का संकल्प लेकर धार्मिक कार्यों में अधिक रुचि लेता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार चैत्र मास सृष्टि की उत्पत्ति से भी जुड़ा हुआ है। ब्रह्मपुराण और नारदपुराण में उल्लेख मिलता है कि ब्रह्मा जी ने इसी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा तिथि को सृष्टि की रचना आरंभ की थी। उस समय चंद्रमा की ज्योति प्रतिदिन बढ़ रही थी और उसी प्रकार सृष्टि भी धीरे-धीरे विकास की ओर अग्रसर हो रही थी। यह प्रतीकात्मक रूप से यह संदेश देता है कि जैसे चंद्रमा की कला प्रतिदिन बढ़ती है, वैसे ही जीवन में भी प्रकाश और ज्ञान की वृद्धि होती रहनी चाहिए।

मत्स्य पुराण में वर्णित कथा के अनुसार भगवान विष्णु ने इसी समय अपना पहला अवतार मत्स्य के रूप में धारण किया था। जब प्रलय के कारण पूरी पृथ्वी जलमग्न हो गई थी, तब भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में प्रकट होकर महाराज मनु की नौका को सुरक्षित स्थान तक पहुंचाया। बाद में जब प्रलय समाप्त हुआ, तब मनु से ही नई सृष्टि का आरंभ हुआ। इस प्रकार चैत्र मास को नई सृष्टि, पुनर्जन्म और नवआरंभ का प्रतीक माना जाता है। यह कथा यह भी सिखाती है कि जब जीवन में संकट आता है, तब ईश्वर किसी न किसी रूप में रक्षा के लिए अवश्य उपस्थित होते हैं। इतिहास की दृष्टि से भी चैत्र मास का विशेष महत्व है। कहा जाता है कि महान सम्राट विक्रमादित्य ने इसी महीने के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से विक्रम संवत की शुरुआत की थी। इसलिए यह दिन हिंदू नववर्ष के रूप में मनाया जाता है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में इसे अलग-अलग नामों से मनाया जाता है, जैसे महाराष्ट्र में गुड़ी पड़वा, आंध्र प्रदेश और कर्नाटक में उगादी और उत्तर भारत में नवसंवत्सर। इन सभी पर्वों का मूल उद्देश्य एक ही है—नए वर्ष का स्वागत उत्साह और सकारात्मकता के साथ करना।

चैत्र मास भगवान श्रीराम और हनुमान जी से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। अगस्त्य संहिता के अनुसार इसी महीने के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को भगवान श्रीराम का जन्म हुआ था, जिसे रामनवमी के रूप में मनाया जाता है। यह दिन धर्म, मर्यादा और आदर्श जीवन का संदेश देने वाले भगवान श्रीराम की स्मृति का पावन अवसर होता है। इसी प्रकार चैत्र पूर्णिमा के दिन हनुमान जयंती मनाई जाती है, जो शक्ति, भक्ति और समर्पण के प्रतीक भगवान हनुमान के जन्मोत्सव के रूप में मनाई जाती है।

प्रकृति की दृष्टि से चैत्र मास अत्यंत सुंदर और आनंदमय समय होता है। यह वह काल होता है जब सर्दी की विदाई हो चुकी होती है और गर्मी का आगमन शुरू हो जाता है। इस परिवर्तन के साथ प्रकृति एक नए रूप में सजने लगती है। पेड़ों पर नई कोपलें निकलती हैं, फूल खिलने लगते हैं और वातावरण में एक नई ताजगी महसूस होती है। खेतों में फसलें पकने लगती हैं और चारों ओर जीवन का उत्साह दिखाई देता है। इसलिए चैत्र मास को प्रकृति के उल्लास और सौंदर्य का महीना भी कहा जाता है।

साहित्य और कला के साधकों के लिए भी यह महीना अत्यंत प्रेरणादायक माना जाता है। प्रकृति के इस नवसृजन से कवियों, कलाकारों और संगीतकारों को नई प्रेरणा मिलती है। पूर्वी भारत के गांवों में इस पूरे महीने 'चैती' या 'चैतार' गीत गाने की परंपरा आज भी जीवित है। इन गीतों में प्रकृति की सुंदरता, प्रेम की भावनाएं और भक्ति का मधुर स्वर झलकता है। इस प्रकार चैत्र मास लोक संस्कृति और परंपराओं का भी एक महत्वपूर्ण समय है।

धार्मिक दृष्टि से यह महीना आध्यात्मिक जागरण का प्रतीक माना जाता है। होली के बाद शुरू होने वाले इस महीने में कई महत्वपूर्ण पर्व मनाए जाते हैं, जिनमें चैत्र नवरात्रि, रामनवमी और हनुमान जयंती प्रमुख हैं। चैत्र नवरात्रि में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है और भक्त उपवास, जप और साधना के माध्यम से अपने जीवन को शुद्ध और संतुलित बनाने का प्रयास करते हैं। यह नौ दिन आध्यात्मिक साधना और आत्मसंयम के विशेष अवसर होते हैं।

शास्त्रों में चैत्र मास को संयमित जीवन जीने का समय भी बताया गया है। इस दौरान व्यक्ति को अपने विचारों, व्यवहार और आचरण को शुद्ध रखने की सलाह दी गई है। व्यसनों से दूर रहना, ब्रह्मचर्य का पालन करना और अपने शरीर तथा मन की स्वच्छता बनाए रखना इस महीने के महत्वपूर्ण नियम माने गए हैं। इसके साथ ही घर और आसपास के वातावरण की सफाई का भी विशेष महत्व बताया गया है, क्योंकि स्वच्छता केवल बाहरी नहीं बल्कि आंतरिक शुद्धि का भी प्रतीक होती है। चैत्र मास ऋतु परिवर्तन का समय भी होता है, इसलिए इस दौरान स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना आवश्यक होता है। सर्दी से गर्मी की ओर बढ़ते इस समय में शरीर कई प्रकार के रोगों के प्रति संवेदनशील हो सकता है। आयुर्वेद में इस मौसम में हल्का, सात्विक और पौष्टिक भोजन करने की सलाह दी गई है। अधिक तैलीय और भारी भोजन से बचना चाहिए तथा फल, सब्जियां और पर्याप्त पानी का सेवन करना चाहिए। इससे शरीर को नई ऋतु के अनुसार ढलने में सहायता मिलती है।

इस महीने में दान का भी विशेष महत्व बताया गया है। शास्त्रों के अनुसार अपनी क्षमता के अनुसार जरूरतमंदों और निर्धनों को अन्न, फल, सब्जियां और वस्त्र दान करना अत्यंत पुण्यदायक माना जाता है। भूखे और प्यासे लोगों को भोजन और पानी देना भी एक महान कार्य माना गया है। यह केवल धार्मिक कर्म नहीं है, बल्कि समाज में करुणा और सहयोग की भावना को मजबूत करने का माध्यम भी है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि चैत्र मास केवल एक नया महीना या नया वर्ष नहीं है, बल्कि यह जीवन में नई शुरुआत और नई ऊर्जा का प्रतीक है। यह हमें यह सिखाता है कि जैसे प्रकृति हर वर्ष नए रूप में खिलती है, वैसे ही मनुष्य भी अपने जीवन में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है।

RNI No. GUJHIN/2011/39228 Printed, Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004
(2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002
and Published from TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005. Editor : MANOJKUMAR CHAMPAKLAL SHAH
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल पीपराळा में यदुवंशी डगायचा दादा के मंदिर के पुनः प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में सहभागी हुए

धार्मिक उत्सव समाज में एकता, संस्कार एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार करते हैं : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल रविवार को पाटण जिले में सांतलपुर तहसील के पीपराळा गाँव में स्थित श्री वीर यदुवंशी डगायचा (डांगर) मंदिर के पुनः प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में सहभागी हुए। मुख्यमंत्री ने मंदिर में पूजा-अर्चना कर इस धार्मिक कार्यक्रम को संबोधित किया। इस कार्यक्रम के आयोजकों तथा आहिर समाज के अग्रणियों द्वारा मुख्यमंत्री का भव्य स्वागत किया गया। मुख्यमंत्री ने इस अवसर पर वीर यदुवंशी डगायचा दादा के शौर्य एवं जीवनगाथा को दर्शाने वाली दस्तावेजी फिल्म भी देखी। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री पटेल ने कहा कि पाटण जिले की पवित्र धरती पर वीर यदुवंशी आहिर डगायचा दादा के मंदिर की पुनः प्राण प्रतिष्ठा का यह पावन अवसर समाज के लिए गौरव का विषय है। ऐसे भक्तिमय तथा धार्मिक उत्सव समाज में एकता, संस्कार एवं आध्यात्मिक शक्ति का संचार करते हैं। उन्होंने कहा कि यदुवंशी आहिर समाज भगवान श्री कृष्ण के पवित्र वंश से जुड़ा हुआ है और इसने सदियों से पशुपालन, कृषि तथा शौर्य, पराक्रम एवं राष्ट्रप्रेम की परंपरा बनाए रखी है। इतिहास के अनुसार विक्रम संवत 1300 में डगायचा दादा ने कच्छ में तुणा गाँव का तोरण (वंदनवार) बांधकर गाँव बसाया था और तब से कच्छ, सौराष्ट्र तथा उत्तर गुजरात में आहिर समाज बसा हुआ है। समाज के गौरवशाली इतिहास तथा संस्कृति को नई पीढ़ी तक पहुँचाने का प्रयास इस मंदिर की पुनः प्राण प्रतिष्ठा द्वारा हुआ है।

मुख्यमंत्री ने आगे कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को उसकी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत के साथ फिर से जोड़ने का महान कार्य किया है। सोमनाथ स्वाभिमान पर्व जैसी पहल से सांस्कृतिक गौरव को नई ऊर्जा मिली है। देश के तीर्थस्थानों के विकास से पर्यटन बढ़ रहा है और स्थानीय अर्थव्यवस्था को नई शक्ति मिल रही है।

मुख्यमंत्री ने सांतलपुर तथा पाटण क्षेत्र में विकास के नए अवसर सृजित हो रहे होने का उल्लेख करते हुए कहा कि चारणका में एशिया का सबसे बड़ा सोलर पार्क शुरू होने से स्थानीय रोजगार के अवसर सृजित हुए हैं और गुजरात रिन्यूएबल एनर्जी में अग्रसर बना है। साणंद व धोलेरा में सेमीकंडक्टर हब के विकास से युवाओं के लिए हाईटेक रोजगार के अवसर सृजित होंगे। उन्होंने प्रधानमंत्री के 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के संकल्प का उल्लेख करते हुए कैच द रेन, एक पेड़ माँ के नाम, स्वच्छता तथा स्वदेशी को प्रोत्साहन जैसे संकल्पों को जीवन में उतारने की अपील की। इस अवसर पर मंत्री श्री त्रिकमभाई छांगा, सांसद श्री पूनमबेन माडम, विधायक श्री लविंगजी ठाकोर, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हेतलबेन ठाकोर, पूर्व केबिनेट मंत्री श्री मुळुभाई बेरा, श्री जवाहर चावडा, लोक साहित्यकार श्री मायाभाई आहिर, संगठन अध्यक्ष श्री रमेश सिंधव, श्री देवजीभाई वडचर, मंदिर ट्रस्ट अध्यक्ष श्री धनजीभाई डांगर, श्री शिवजीभाई आहिर सहित बड़ी संख्या में आहिर समाज के भाई-बहन उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को उसकी सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत के साथ फिर से जोड़ने का महान कार्य किया है
- मोदी साहब के नेतृत्व में देश के तीर्थस्थानों के विकास को नई गति मिली है
- सोमनाथ स्वाभिमान पर्व से हमारे सांस्कृतिक गौरव को नई ऊर्जा मिली

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026

पश्चिम रेलवे ने महिला कर्मियों का सम्मान कर मनाया महिला दिवस,पॉपुलर रेडियो चैनल बिग FM के साथ मिलकर चर्चगेट, वड़ोदरा तथा इंदौर में लाइव रेडियो इंटरैक्शन

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा पॉपुलर रेडियो चैनल BIG FM के साथ मिलकर एक अनोखी पहल के तहत अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 मनाया गया, जिसमें रेलवे स्टेशनों पर लाइव स्टूडियो इंटरैक्शन के माध्यम से महिला रेलवे कर्मचारियों की संघर्ष और उपलब्धियों से भरी प्रेरणादायक गाथाएँ सीधे श्रोताओं तक पहुँचाई गईं।

पश्चिम रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी श्री विनीत अभिषेक द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, महिला दिवस के उपलक्ष में BIG FM ने रविवार, 08 मार्च 2026 को चर्चगेट, वडोदरा और इंदौर रेलवे स्टेशनों पर एक साथ एक खास लाइव स्टूडियो शिफ्ट ऑर्गनाइज़ किया गया। लाइव ब्रॉडकास्ट के दौरान BIG FM के रेडियो जॉकी ने पश्चिम रेलवे के विभिन्न डिपार्टमेंट की महिला अधिकारियों और कर्मचारियों से बातचीत की। चर्चगेट स्टेशन पर लाइव सेशन को RJ रानी ने होस्ट किया, जिन्होंने पश्चिम रेलवे की तीस महिला कर्मचारियों से बातचीत की और उनके प्रोफेशनल सफ़र, अनुभवों और उपलब्धियों पर बात की। इसी तरह, वडोदरा स्टेशन पर लाइव सेशन को RJ मेघा ने होस्ट किया, जबकि इंदौर स्टेशन पर इसे RJ पीहू ने होस्ट किया।

इन दिलचस्प बातचीत में महिला रेलवे कर्मचारियों ने रेलवे ऑपरेशन में अपनी भूमिका और ज़िम्मेदारियों, रेलवे सेक्टर में करियर चुनने के पीछे की प्रेरणा और अपने प्रोफेशनल सफ़र के दौरान आई चुनौतियों के बारे में अपनी बातें शेयर कीं। उन्होंने यह भी बताया कि कैसे उन्होंने पक्के इरादे और लगन से मुश्किलों को पार किया और रेलवे सिस्टम के सुरक्षित और कुशल कामकाज में योगदान दिया। चर्चा में रेलवे में टेक्निकल और ऑपरेशनल भूमिकाओं में महिलाओं की बढ़ती मौजूदगी पर भी ज़ोर दिया गया, जो संगठन में हो रहे लगातार बदलाव को दिखाता है। इसमें शामिल कर्मचारियों ने अपने अनुभव शेयर किए और ऐसे वर्कफ़ोर्स का हिस्सा होने पर गर्व जताया जहाँ महिलाएँ तेज़ी से बड़ी ज़िम्मेदारियाँ उठा रही हैं। प्रोग्राम के दौरान, महिला कर्मचारियों ने युवा लड़कियों के लिए मोटिवेशनल मैसेज भी दिए और उन्हें आत्मविश्वास और पक्के इरादे के साथ इंजीनियरिंग, टेक्निकल फ़ील्ड और रेलवे सेक्टर में करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित किया। पश्चिम रेलवे जेंडर इक्वालिटी को बढ़ावा देने और महिला कर्मचारियों को अलग-अलग डिपार्टमेंट में मौके देकर उन्हें मज़बूत बनाने के लिए कमिटेड है। ऐसी कोशिशें न सिर्फ़ ऑर्गनाइज़ेशन में महिलाओं के योगदान को पहचान देती हैं, बल्कि अगली पीढ़ी को बाधाओं को तोड़ने और अपने सपने पूरे करने के लिए भी प्रेरित करती हैं।

नारी शक्ति का अभूतपूर्व संगमः अहमदाबाद मण्डल पर हर्षोल्लास के साथ मनाया गया अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

साबरमती में गूंजी नारी शक्ति की जयकारः अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर उत्कृष्ट कार्य के लिए 34 महिला कर्मचारी सम्मानित

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे के अहमदाबाद मंडल द्वारा अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2026 के अवसर पर साबरमती स्थित सामुदायिक भवन में एक भव्य एवं गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस वर्ष के वैश्विक विषय 'गिव टू गेन' (Give to Gain) के अनुरूप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य उदारता, पारस्परिक सहयोग और महिला नेतृत्व की शक्ति को प्रोत्साहित करना रहा।

पश्चिम रेलवे महिला कल्याण संगठन (WRWWO), अहमदाबाद की अध्यक्षा श्रीमती शेफाली गुप्ता ने अपने संबोधन में कहा कि अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि महिलाओं के सम्मान, उनके संघर्ष, उपलब्धियों और अधिकारों को स्मरण करने का महत्वपूर्ण अवसर है। उन्होंने कहा कि महिला केवल एक शब्द नहीं, बल्कि शक्ति, प्रेम, त्याग और धैर्य की प्रतिमूर्ति है। वह माँ बनकर संस्कार देती है, बहन बनकर स्नेह बाँटती है, पत्नी बनकर जीवन में साथ निभाती है और बेटी बनकर घर को खुशियों से भर देती है।

उन्होंने कहा कि भारतीय रेल जैसे विशाल और गौरवशाली संगठन का हिस्सा होना गर्व की बात है। भारतीय रेल देश की जीवनरेखा है और इसे सशक्त बनाने में महिलाओं की भूमिका निरंतर बढ़ रही है। अहमदाबाद मंडल में भी महिला रेलकर्मी पुरुष सहकर्मियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। आज महिलाएँ लोको पायलट, इंजीनियर, स्टेशन मास्टर तथा प्रशासनिक अधिकारी के रूप में विभिन्न जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन कर रही हैं।

मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश ने अपने प्रेरक संबोधन में कहा कि वर्तमान समय में महिलाओं ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से समाज की रूढ़िवादी सोच को बदल दिया है। उन्होंने कहा कि आज अहमदाबाद मंडल की महिला रेलकर्मी लोको पायलट के रूप में ट्रेन संचालन से लेकर तकनीकी और इंजीनियरिंग कार्यों तक में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। यह दिवस महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और करियर में समान अवसरों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

इस अवसर पर श्रीमती शेफाली गुप्ता एवं मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश द्वारा वर्ष 2025–26 के दौरान विभिन्न विभागों में उत्कृष्ट कार्य करने वाली 34 महिला कर्मचारियों को प्रशस्ति पत्र एवं पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के दौरान शेल्बी हॉस्पिटल, नरोडा (अहमदाबाद) की कंसल्टेंट रेडियोलॉजिस्ट एवं ऑन्कोलॉजिस्ट डॉ. प्रियंका अलुरकर ने महिला स्वास्थ्य पर महत्वपूर्ण जानकारी साझा की। उन्होंने विशेष रूप से महिलाओं में होने वाले कैंसर जैसे सर्वाइकल कैंसर और ब्रेस्ट कैंसर के लक्षण, कारण और बचाव के उपायों पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि समय पर जांच और उचित उपचार के माध्यम से इन बीमारियों से काफी हद तक बचाव संभव है। उन्होंने महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य जांच कराने और किसी भी असामान्य लक्षण दिखाई देने पर तुरंत चिकित्सकीय सलाह लेने की सलाह दी।

कार्यक्रम में महिला रेलकर्मियों ने अपनी सांस्कृतिक प्रतिभा का भी शानदार प्रदर्शन किया। सिंगिंग, ग्रुप डांस, क्विज प्रतियोगिता, स्वरचित कविता पाठ तथा शायरी के माध्यम से महिलाओं ने अपनी रचनात्मकता और उत्साह का परिचय दिया।

वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री सिद्धार्थ के मार्गदर्शन तथा कर्मचारी हित निधि के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में कर्मचारी हित निधि के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में लगभग 300 से अधिक महिला कर्मचारी उत्साहपूर्वक शामिल हुईं और कार्यक्रम को सफल बनाया।

भावनगर रेलवे मंडल में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में विविध कार्यक्रमों का आयोजन

(जीएनएस)। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में पश्चिम रेलवे के भावनगर मंडल में मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन में महिला कर्मचारियों के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य महिला कर्मचारियों के स्वास्थ्य, जागरूकता, मनोरंजन तथा आपसी संवाद को प्रोत्साहित करना था। इस अवसर पर महिला कर्मचारियों के स्वास्थ्य एवं जागरूकता को ध्यान में रखते हुए एक स्वास्थ्य संबंधी सेमिनार आयोजित किया गया। सेमिनार में डॉ. श्रीमती अनु श्री ने महिलाओं में सामान्यतः पाए जाने वाले विभिन्न रोगों, उनके लक्षणों, बचाव के उपायों तथा नियमित स्वास्थ्य जांच के महत्व के संबंध में विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने महिला कर्मचारियों को स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने, संतुलित आहार लेने, नियमित व्यायाम करने तथा समय-समय पर चिकित्सकीय परामर्श लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान उपस्थित महिला कर्मचारियों द्वारा पूछे गए विभिन्न प्रश्नों का भी डॉक्टर द्वारा विस्तार से समाधान किया गया। महिला कर्मचारियों के मनोरंजन, आपसी संवाद एवं टीम भावना को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दिनांक 07 मार्च 2026 को एक विशेष "ग्राम यात्रा" कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत महिला प्रतिभागियों को ग्रामीण जीवन शैली से परिचित कराया गया। कार्यक्रम में विभिन्न खेलकूद गतिविधियाँ, रेन डांस तथा ग्रामीण परिवेश से संबंधित अन्य मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिससे प्रतिभागियों को ग्रामीण संस्कृति एवं जीवन शैली को निकट से देखने और अनुभव करने का अवसर प्राप्त हुआ।

इस ग्राम यात्रा कार्यक्रम में महिला कर्मचारियों ने अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ भाग लिया। भावनगर मंडल की 50 से अधिक महिला कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में सक्रिय भागीदारी की। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को आकर्षक उपहार प्रदान कर सम्मानित एवं पुरस्कृत भी किया गया, जिससे प्रतिभागियों में विशेष उत्साह एवं प्रसन्नता का वातावरण रहा।

इस संबंध में जानकारी देते हुए वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी ने बताया कि कार्यक्रम में वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी श्री हुबलाल जगन, सहायक मंडल कार्मिक अधिकारी श्री वाई. राधेश्याम तथा स्थानीय कर्मचारी हित निधि (LSBF) के पदाधिकारी भी उपस्थित रहे और उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन में सहयोग प्रदान किया। उक्त सभी कार्यक्रम मंडल रेल प्रबंधक, भावनगर श्री दिनेश वर्मा के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा से सफलतापूर्वक संपन्न हुए।

गुजरात में 'परिवर्तन' की हुंकारः केजरीवाल का भाजपा पर हमला, बोले—30 साल की सरकार उखाड़ फेंको

(जीएनएस)। गांधीनगर। गुजरात की राजनीति में बदलाव की बात करते हुए आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक Arvind Kejriwal ने एक बार फिर राज्य की सत्तारूढ़ Bharatiya Janata Party और विपक्षी Indian National Congress पर तीखा हमला बोला। गांधीनगर में आयोजित एक बड़ी जनसभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि गुजरात में पिछले 30 वर्षों से एक ही राजनीतिक व्यवस्था चल रही है, जिसमें केवल सरकारें बदलती रही हैं लेकिन आम लोगों की स्थिति में अपेक्षित सुधार नहीं हुआ। उन्होंने लोगों से अपील की कि अब समय आ गया है जब राज्य में वास्तविक परिवर्तन लाया जाए और ऐसी सरकार चुनी जाए जो जनता के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता दे।

सभा में बड़ी संख्या में किसान, युवा और आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ता मौजूद थे। केजरीवाल ने अपने भाषण की शुरुआत किसानों की समस्याओं से की और कहा कि गुजरात को अक्सर विकास का मॉडल बताया जाता है, लेकिन जब गांवों में जाकर किसानों से बातचीत की जाती है तो वास्तविक स्थिति सामने आती है। उन्होंने कहा कि राज्य के कई इलाकों में किसान आज भी पानी की समस्या से जूझ रहे हैं, सिंचाई के लिए पर्याप्त सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं और खेती की लागत लगातार बढ़ती जा रही है। इसके साथ ही किसानों को उनकी फसलों का उचित मूल्य भी नहीं मिल रहा है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर होती जा रही है।

उन्होंने बताया कि हाल ही में आम आदमी पार्टी के कई नेताओं ने राज्य में 'किसान बचाओ यात्रा' निकाली, जिसमें गांव-गांव जाकर किसानों से बातचीत की गई। इस यात्रा के दौरान किसानों ने अपनी समस्याएं खुलकर सामने रखीं। कई किसानों ने बताया कि उन्हें बिजली, पानी और बाजार तक पहुंच जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। केजरीवाल ने कहा कि यह स्थिति उस राज्य में है जिसे देश का सबसे विकसित राज्य बताया जाता है, इसलिए जरूरी है कि सरकार इन मुद्दों पर गंभीरता से ध्यान दे।

अपने संबोधन में केजरीवाल ने बोटाद जिले में किसानों के आंदोलन का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि कुछ समय पहले वहां किसान करदा प्रथा के खिलाफ शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, लेकिन सरकार ने उनकी आवाज दबाने के लिए सख्ती बरती। उन्होंने आरोप लगाया कि कई किसानों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया और महीनों तक उन्हें रिहा नहीं किया गया। उनके अनुसार यह लोकतांत्रिक व्यवस्था के लिए ठीक नहीं है, क्योंकि लोकतंत्र में लोगों को अपनी बात रखने का अधिकार होना चाहिए।

केजरीवाल ने कहा कि सरकार के खिलाफ आवाज उठाने वाले कई नेताओं और सामाजिक कार्यकर्ताओं को भी परेशान किया जाता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने भ्रष्टाचार या किसानों के मुद्दों पर आवाज उठाई, लेकिन उन्हें झूठे मामलों में फंसाकर जेल भेज दिया गया। उन्होंने इसे लोकतंत्र की भावना के खिलाफ बताया और कहा कि सरकार को आलोचना को सहन करने की क्षमता विकसित करनी चाहिए।

अपने भाषण के दौरान केजरीवाल ने अपने ऊपर लगे आरोपों का भी जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उन्हें भी कई मामलों में निशाना बनाया गया और जेल भेजा गया। उन्होंने कहा कि उन पर बड़े घोटाले के आरोप लगाए गए, लेकिन जांच के दौरान कोई ठोस सबूत सामने नहीं आया। उनके अनुसार राजनीतिक विरोधियों को कमजोर करने के लिए इस तरह की रणनीति अपनाई जाती है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा होनी चाहिए, लेकिन उसे व्यक्तिगत या दमनकारी स्तर तक नहीं ले जाना चाहिए।

गुजरात की राजनीति पर टिप्पणी करते हुए केजरीवाल ने कहा कि यहां लंबे समय से दो ही प्रमुख दल सक्रिय रहे हैं—भाजपा और कांग्रेस। उनके अनुसार इन दोनों दलों ने वर्षों तक सत्ता की राजनीति की है, लेकिन आम जनता की समस्याओं का स्थायी समाधान नहीं निकाल पाए हैं। उन्होंने कहा कि आम आदमी पार्टी एक वैकल्पिक राजनीति की बात करती है, जिसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और किसानों की समृद्धि को प्राथमिकता दी जाती है।

उन्होंने दिल्ली और पंजाब के उदाहरण देते हुए कहा कि जहां-जहां आम आदमी पार्टी को मौका मिला है, वहां जनता के हित में कई कदम उठाए गए हैं। दिल्ली में सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाया गया, मोहल्ला क्लीनिक की व्यवस्था शुरू की गई और बिजली-पानी के बिलों में राहत दी गई। इसी तरह पंजाब में भी किसानों को मुफ्त बिजली और कई सामाजिक योजनाओं का लाभ दिया जा रहा है। पंजाब के मुख्यमंत्री Bhagwant Mann का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि वहां की सरकार किसानों और आम लोगों के हितों के लिए लगातार काम कर रही है।

केजरीवाल ने युवाओं के मुद्दे पर भी विस्तार से बात की। उन्होंने कहा कि गुजरात में बार-बार प्रतियोगी परीक्षाओं के प्रश्नपत्र लीक होने की घटनाएं सामने आती रही हैं, जिससे लाखों युवाओं का भविष्य प्रभावित होता है। उन्होंने कहा कि युवा लंबे समय तक मेहनत करके परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन पेपर लीक होने के कारण उनकी मेहनत बेकार चली जाती है। उन्होंने दावा किया कि दिल्ली और पंजाब में उनकी सरकार के दौरान इस तरह की समस्या सामने नहीं आई है।

उन्होंने यह भी कहा कि गुजरात में शराबबंदी लागू होने के बावजूद कई जगहों पर अवैध रूप से शराब की बिक्री होती है। उनके अनुसार यह एक गंभीर समस्या है, क्योंकि इससे युवाओं पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उन्होंने कहा कि सरकार को इस दिशा में सख्त कदम उठाने चाहिए ताकि समाज में नशे की प्रवृत्ति को रोका जा सके।

सभा के अंत में केजरीवाल ने लोगों से अपील की कि वे आने वाले समय में सोच-समझकर फैसला करें और ऐसी सरकार चुनें जो वास्तव में जनता की समस्याओं को समझे और उनका समाधान करने के लिए ईमानदारी से काम करे। उन्होंने कहा कि यदि जनता एकजुट होकर परिवर्तन का निर्णय लेती है तो राज्य की राजनीति में बड़ा बदलाव संभव है।

उन्होंने कहा कि उनका उद्देश्य केवल चुनाव जीतना नहीं है, बल्कि ऐसी व्यवस्था बनाना है जिसमें हर वर्ग के लोगों को बराबर अवसर मिल सके। किसान, युवा, महिलाएं, व्यापारी और मजदूर—सभी के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करना ही उनकी राजनीति का मुख्य लक्ष्य है।

केजरीवाल ने अपने भाषण का समापन करते हुए कहा कि गुजरात की जनता जागरूक और समझदार है। यदि वह बदलाव का फैसला करती है तो राज्य में नई राजनीतिक दिशा तय हो सकती है। उनके अनुसार आने वाले वर्षों में गुजरात की राजनीति में बड़ा परिवर्तन देखने को मिल सकता है, जिसमें जनता की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से घाटलोडिया वाटर डिस्ट्रीब्यूशन स्टेशन का लोकार्पण

घाटलोडिया वाटर डिस्ट्रीब्यूशन स्टेशन से लगभग 1,25,000 आबादी को पर्याप्त दबाव से पानी मिलेगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से रविवार को अहमदाबाद में घाटलोडिया वॉर्ड में नवनिर्मित वाटर डिस्ट्रीब्यूशन स्टेशन का लोकार्पण किया गया।

अहमदाबाद महानगर पालिका के उत्तर-पश्चिम जोन के घाटलोडिया वॉर्ड में 55.31 करोड़ रुपए की लागत से पंपहाउस से सज्ज 250 लाख लीटर क्षमता की भूमिगत टंकी तथा 25 लाख लीटर क्षमता वाली ओवरहेड टंकी के साथ नया वाटर डिस्ट्रीब्यूशन स्टेशन बनाया गया है। इसके चलते अब घाटलोडिया क्षेत्र में घाटलोडिया ब्रिज, पावापुरी चौराहा, लक्ष्मणगढ चौराहा एवं सत्ताधार चौराहा होकर भूयंगदेव चौराहे तक के क्षेत्र, घाटलोडिया गामतल (ग्रामीण क्षेत्र), कर्मचारीनगर, सीपी नगर, अर्जुन टावर, संस्कृत फ्लैट जैसे घाटलोडिया टीपी-2 के समग्र क्षेत्र के निवासियों को पर्याप्त मात्रा में पानी की आपूर्ति मिलेगी। इस स्टेशन से लगभग 4 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में करीब 1,25,000 जनसंख्या को पर्याप्त दबाव के साथ जलापूर्ति की जा सकेगी।

इस अवसर पर महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, विधायक श्री हसमुख पटेल, उप महापौर श्री जतिन पटेल, मनपा स्थायी समिति के अध्यक्ष श्री देवांग दाणी सहित मनपा पदाधिकारी, मनपा आयुक्त श्री बंछानिधि पाणि सहित उच्चाधिकारी और घाटलोडिया क्षेत्र के नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से घाटलोडिया में राजस्व विभाग की सरकारी चावडी तथा खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के कार्यालय का शिलान्यास

जिला प्रशासन द्वारा घाटलोडिया क्षेत्र के नागरिकों के लिए सरकारी सेवाएँ अधिक सुगम बनाने का आयोजन

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के करकमलों से रविवार को अहमदाबाद के घाटलोडिया में राजस्व विभाग की सरकारी चावडी तथा खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के कार्यालय के नवनिर्मित होने वाले भवन का शिलान्यास किया गया। उल्लेखनीय है कि जिला प्रशासन के इन नए कार्यालयों के निर्माण से घाटलोडिया क्षेत्र के नागरिकों को सरकारी सेवाएँ अधिक सुगमता से तथा एक ही स्थान से उपलब्ध होंगी। इस अवसर पर अहमदाबाद जिला कलेक्टर श्री सुजीत कुमार, महापौर श्रीमती प्रतिभाबेन जैन, उप महापौर श्री जतिनभाई पटेल, स्थानीय विधायक, जिला प्रशासन के अधिकारी, कर्मचारी तथा स्थानीय नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

सऊदी अरब के रिहायशी इलाके पर मिसाइल हमला, भारतीय समेत दो की मौत, 12 घायल

(जीएनएस)। नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में बढ़ते तनाव के बीच Saudi Arabia के एक रिहायशी इलाके में रविवार को मिसाइल हमला होने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि 12 अन्य लोग घायल हो गए। मृतकों में एक भारतीय और एक बांग्लादेशी नागरिक शामिल बताए जा रहे हैं। यह घटना Al Kharj शहर में उस समय हुई जब एक मिसाइल रखरखाव और सफाई कंपनी के आवासीय परिसर पर आकर गिर गई। विस्फोट के कारण आसपास के इलाके में अफरा-तफरी मच गई और कई इमारतों को नुकसान पहुंचा। सऊदी अरब के नागरिक सुरक्षा महानिदेशालय के अनुसार, घटना की सूचना मिलते ही राहत और बचाव दल तुरंत मौके पर पहुंच गया। बचाव कर्मियों ने मलबे में फंसे लोगों को निकालकर नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया। अधिकारियों ने बताया कि हमले में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 12 अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल सभी लोगों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत पर नजर रखी जा रही है। बताया जा रहा है कि मिसाइल जिस परिसर में गिरी, वह एक कंपनी का आवासीय क्षेत्र था, जहां विदेशी कर्मचारी रहते थे। विस्फोट इतना तेज था कि आसपास की कई इमारतों के शीशे टूट गए और परिसर के कई हिस्सों को भारी नुकसान पहुंचा। स्थानीय प्रशासन ने तुरंत इलाके को घेर लिया और सुरक्षा कारणों से आम लोगों की आवाजाही पर रोक लगा दी। सऊदी नागरिक सुरक्षा विभाग के अधिकारियों ने बताया कि मृतकों की पहचान फिलहाल सार्वजनिक नहीं की गई है, लेकिन प्रारंभिक जानकारी के अनुसार मृतकों में एक भारतीय नागरिक और एक बांग्लादेशी नागरिक शामिल हैं।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने दक्षिण गुजरात के ग्रोथ हब के रूप में सूरत इकोनॉमिक रीजन (एसईआर) को रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन के लिए सर्वप्रथम 1185 करोड़ रुपए के कार्य मंजूर किए

- प्रधानमंत्री द्वारा दिए गए 'अमृतकाल' के विजन के अनुरूप मुख्यमंत्री का महत्वपूर्ण कदम
- मुख्यमंत्री का 'विकसित गुजरात@2047' के लक्ष्यों का साकार करने के लिए गठित ग्रिट द्वारा इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनोवेशन, इनडिविड्युअल तथा इंस्टीट्यूशन आधारित दीर्घाकालीन एवं परिणामोन्मुखी विकास का दीर्घदृष्टिपूर्ण आयोजन
- मुख्यमंत्री ने राज्य के सर्वांगीण तथा संतुलित विकासार्थ 6 ग्रोथ हब विकसित करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकतानुसार अत्यंत कम समय में रीजनल इकोनॉमिक मास्टरप्लान तैयार करके 'जो कहना, वह करना' का ध्येय साकार किया
- एसईआर की कनेक्टिविटी मजबूत होने से सूरत, तापी, वलसाड, भरूच, नवसारी तथा डांग जिलों के सर्वांगीण विकास की रफ्तार तेज होगी
- लॉजिस्टिक कार्यक्षमता में वृद्धि के साथ औद्योगिक विस्तार, कृषि फसलों की परिवहन सुविधा तथा पर्यटन विकास सुदृढ़ बनेंगे और रोजगार के अवसर बढ़ेंगे
- कुल 383 किलोमीटर लंबाई में रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन के 24 कार्य शुरू किए जाएंगे

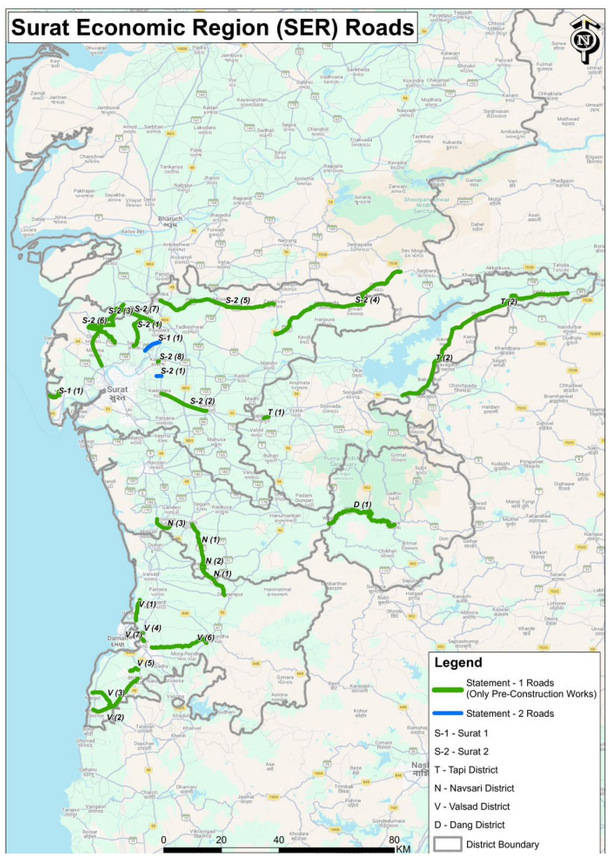

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा दिए गए 'विकसित भारत@2047' के संकल्प को अमृतकाल में 'विकसित गुजरात@2047' से साकार करने का संकल्प किया है।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने इस उद्देश्य से राज्य के सर्वांगीण विकास को गति देने के लिए गुजरात राज्य इंस्टीट्यूशन फॉर ट्रांसफॉर्मेशन (जीआरआईटी-ग्रिट) का गठन कर इन्फ्रास्ट्रक्चर, इनोवेशन, इनडविड्युअल तथा इंस्टीट्यूशन आधारित दीर्घकालीन एवं परिणामोन्मुखी विकास का आयोजन किया है।

मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में ग्रिट द्वारा राज्य के सर्वांगीण एवं संतुलित विकासार्थ 6 ग्रोथ हब विकसित करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र की आवश्यकता के अनुसार बहुत ही कम समय में जो रीजनल इकोनॉमिक मास्टरप्लान तैयार हुए हैं, उसमें मुख्यमंत्री ने दक्षिण गुजरात के ग्रोथ हब के रूप में सूरत इकोनॉमिक रीजन (एसईआर) में रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर के लिए सर्वप्रथम 1185 करोड़ रुपए के कार्य मंजूर कर 'जो कहना, वह करना' का ध्येय साकार किया है।

एसईआर में सूरत, भरूच, नवसारी, वलसाड, तापी तथा डांग जिलों का समावेश होता है और ये क्षेत्र राज्य के आर्थिक विकास में 35 प्रतिशत से अधिक योगदान देते हैं।

देश के आर्थिक विकास में उल्लेखनीय योगदान देने वाला गुजरात 'विकसित भारत@2047' में भी लीड ले; इस दृष्टिकोण से मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल के मार्गदर्शन में 'विकसित गुजरात@2047' रोडमैप कार्यरत हुआ है।

इस रोडमैप अंतर्गत 'अनिंग वेल-लिविंग वेल' का ध्येय पूरा करने के लिए राज्य में आर्थिक विकास से अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ रखने की जो मंशा मुख्यमंत्री ने रखी है, उसमें सूरत इकोनॉमिक रीजनल दीर्घकालीन आर्थिक विकास को आगे बढ़ाने के मुख्य विकास केन्द्र के रूप में उभर रहा है।

इस स्ट्रैटेजिक मल्टीडिस्ट्रिक्ट आर्थिक क्षेत्र के विकास के इकोनॉमिक मास्टर प्लान से अमृतकाल विजन को पूरा करने के महत्वपूर्ण परिबल के रूप में रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन के लिए एसईआर के पाँच जिलों में कुल 383 किलोमीटर के 24 कार्यों के लिए ये 1185 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं।

रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन से क्या लाभ होगा ?

लॉजिस्टिक कार्यक्षमता बढ़ेगी

इस रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन के फलस्वरूप सूरत, तापी, वलसाड, भरूच तथा नवसारी जिलों के मुख्य औद्योगिक हब एवं जीआईडीसी क्षेत्रों को जोड़ने वाले सड़क मार्गों में सुधार होने से लॉजिस्टिक कार्यक्षमता बढ़ेगी और माल-सामान तथा श्रमिकों की आवाजाही अधिक सुगम होगी। इतना ही नहीं; टेक्सटाइल, केमिकल्स, पेट्रोकेमिकल्स तथा डायमंड इंडस्ट्रीज के विकास को मजबूती मिलेगी।

इंडस्ट्रियल एक्सपान्शन – औद्योगिक विस्तार

एसईआर में समाविष्ट हुए जिलों में इस रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन के कारण फिशरीज, हजीरा पोर्ट, शुगर फैक्ट्री, सुमूल डेयरी, पापड उद्योग, माइनिंग एंड लिग्नाइट प्रोजेक्ट जैसी विभिन्न उत्पाद इकाइयों वाले औद्योगिक क्षेत्र को सीधा लाभ मिलेगा।

इसके अतिरिक्त; कडोद, कडोदरा, जोलवा, मांगरोळ, कोसंबा तथा तडकेश्वर जैसे महत्वपूर्ण जीआईडीसी क्षेत्रों की कन्किटिविटी मजबूत होने से औद्योगिक विस्तार द्वारा विकास को भी वेग मिलेगा।

कृषि परिवहन सुविधा सरल होगी

रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर कनेक्टिविटी अपग्रेडेशन से एसईआर के जिलों के कृषि उत्पादों के परिवहन में तेजी आएगी और किसान अपने फसल उत्पाद एवं वस्तुएँ बाजार तक आसानी से पहुँचा सकेंगे तथा कृषि क्षेत्र को अधिक प्रोत्साहन मिलेगा।

टूरिज्म डेवलपमेंट – पर्यटन विकास

दक्षिण गुजरात प्रदेश के सिद्धनाथ महादेव, शबरीधाम, पांडवगुफा, अंजनिकुंड, संजाण की पारसी अगियारी जैसे धार्मिक स्थलों पर आने वाले पर्यटकों को यह सुदृढ़ रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन अधिक सरलता देगा।

इसके अतिरिक्त; महाल के जंगलों, सापुतारा, विल्सन हिल जैसे टूरिस्ट प्लेसेज तथा इकोटूरिज्म स्थलों पर पहुँचना सुगम बनने से समग्रतः पर्यटन गतिविधियों को नई दिशा मिलेगी।

रोजगार सृजन के अवसर

सूरत इकोनॉमिक रीजनल में मुख्यतः डायमंड इंडस्ट्रीज, पेट्रोकेमिकल एंड केमिकल, टेक्सटाइल, फिशरीज जैसे परंपरागत सेक्टर्स के अलावा; सेमीकंडक्टर, ग्रीन हाइड्रोजन, लॉजिस्टिक्स जैसे उभरते क्षेत्रों के विकास के नए अवसर इस रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन से सृजित होंगे। इसके परिणामस्वरूप युवा शक्ति को बड़े पैमाने पर रोजगार के अवसर मिलेंगे।

एसईआर को 'विकसित गुजरात@2047' के लिए स्ट्रैटेजिक ग्रोथ इंजन बनाने में नया बल मिलेगा

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने एसईआर को 'विकसित गुजरात@2047' के लिए स्ट्रैटेजिक ग्रोथ इंजन बनाने का दृष्टिकोण रखा है और अपेक्षा है कि 2047 तक 3.5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के राज्य के विजन में यह एसईआर जीएसडीपी में 35 प्रतिशत से अधिक योगदान दे।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल द्वारा एसईआर के लिए रोड इन्फ्रास्ट्रक्चर अपग्रेडेशन की दी गई मंजूरी के फलस्वरूप इन्फ्रास्ट्रक्चर आधारित विकास को नया बल मिलेगा, जिससे एसईआर सर्वग्राही विकास के नए माइलस्टोन पार करेगा।

राजकोट में 90 लाख की लागत से बनेगा सुविधा पथ सीसी रोड, मंत्री कुंवरजीभाई बावलिया ने किया शिलान्यास

(जीएनएस)। राजकोट। गुजरात के Rajkot जिले के विंछिया तालुका में ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। राज्य सरकार के कैबिनेट मंत्री Kunvarjibhai Bavaliya ने विंछिया तालुका के पाटियाली गांव में लगभग 90 लाख रुपये की लागत से बनने वाले सुविधा पथ सीसी रोड का विधिवत शिलान्यास किया। इस सड़क के निर्माण से क्षेत्र के कई गांवों को बेहतर आवागमन सुविधा मिलेगी और ग्रामीण विकास को नई गति मिलने की उम्मीद है।

शिलान्यास कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ग्रामीण, जनप्रतिनिधि और अधिकारी उपस्थित रहे। इस अवसर पर मंत्री बावलिया ने कहा कि पाटियाली गांव और आसपास के इलाकों के लिए यह सड़क बेहद महत्वपूर्ण साबित होगी। उन्होंने बताया कि यह सड़क मोढुका–पाटियाली–देवधरी को जोड़ने वाले नवीन मार्ग के रूप में विकसित की जाएगी, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में काफी सुविधा मिलेगी और क्षेत्र की आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलेगा।

मंत्री ने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए सड़कें सबसे महत्वपूर्ण आधारभूत संरचना होती हैं। अच्छी सड़कें न केवल गांवों को शहरों से जोड़ती हैं बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार और रोजगार के अवसरों को भी आसान बनाती हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का लक्ष्य है कि हर गांव को मजबूत सड़क नेटवर्क से जोड़ा जाए ताकि विकास का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंच सके।

उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि

प्रस्तावित सुविधा पथ सीसी रोड की कुल लंबाई लगभग 780 मीटर और चौड़ाई 5.50 मीटर होगी। सड़क निर्माण में आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जाएगा। इसमें बॉक्स कटिंग, मेटलिंग कार्य, सीसी वियरिंग कोट, सड़क फर्नीचर और थर्मोप्लास्टिक बेल्ट जैसी सुविधाएं शामिल होंगी। इन तकनीकों के उपयोग से सड़क की गुणवत्ता बेहतर होगी और लंबे समय तक टिकाऊ बनी रहेगी। मंत्री बावलिया ने कहा कि इस सड़क के बनने से पाटियाली गांव के साथ-साथ आसपास के अन्य गांवों के लोगों को भी लाभ मिलेगा। उन्होंने बताया कि ग्रामीणों को बाजार, अस्पताल, स्कूल और अन्य आवश्यक सेवाओं तक पहुंचने में अब कम समय लगेगा। साथ ही कृषि उत्पादों को मंडियों तक पहुंचाना भी आसान हो जाएगा, जिससे किसानों को आर्थिक रूप से फायदा होगा। उन्होंने यह भी बताया कि क्षेत्र के समग्र विकास के लिए कई अन्य सड़क परियोजनाओं को भी मंजूरी दी गई है। मोढुका से पाटियाली, देवधरी, अकाडिया और तुरखा गांवों को जोड़ने वाली नई सड़कों के निर्माण की योजना स्वीकृत हो चुकी है।

इसके अलावा फुलजर और वेरावल गांवों में पुलों के निर्माण का कार्य भी प्रस्तावित है। इन परियोजनाओं के पूरा होने के बाद पूरे क्षेत्र में यातायात व्यवस्था और अधिक सुगम हो जाएगी। मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ग्रामीण विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। गांवों में बुनियादी सुविधाओं को मजबूत करने के लिए करोड़ों रुपये की लागत से विभिन्न परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। सड़क, पानी, बिजली, सिंचाई और शिक्षा जैसी सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम किया जा रहा है।

उन्होंने कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए भी विशेष प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार का लक्ष्य है कि गांवों में ही रोजगार के अवसर पैदा हों ताकि युवाओं को काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन न करना पड़े। इसके लिए कौशल विकास कार्यक्रमों और लघु उद्योगों को प्रोत्साहन देने वाली योजनाओं को भी लागू किया जा रहा है।

मंत्री बावलिया ने जल संरक्षण के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि पानी की समस्या को दूर करने के लिए सरकार कई योजनाओं पर काम कर रही है। उन्होंने विशेष रूप से SAUNI Yojana का उल्लेख करते हुए कहा कि इस योजना के माध्यम से सौराष्ट्र क्षेत्र में पानी की समस्या को काफी हद तक कम किया गया है। जल संसाधनों के बेहतर प्रबंधन से किसानों को सिंचाई के लिए पर्याप्त पानी मिल सकेगा और कृषि उत्पादन में वृद्धि होगी।

कार्यक्रम के दौरान रोड एंड बिल्डिंग विभाग के डिप्टी इंजीनियर जे.एन. राठौड़ ने सड़क निर्माण से संबंधित तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि निर्माण कार्य को तय समय सीमा के भीतर और गुणवत्ता मानकों के अनुसार पूरा किया जाएगा। विभाग की ओर से यह सुनिश्चित किया जाएगा कि सड़क लंबे समय तक टिकाऊ रहे और लोगों को बेहतर सुविधा प्रदान करे।

शिलान्यास समारोह में स्थानीय अग्रणी अश्विनभाई सांकलिया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। उन्होंने सरकार द्वारा क्षेत्र में किए जा रहे विकास कार्यों की सराहना की और कहा कि इस सड़क के निर्माण से गांवों के लोगों को काफी लाभ मिलेगा।

कार्यक्रम में अग्रणी सर्वेयर नाथाभाई, विपुलभाई भुवा, किशोरभाई गोहिल, लालभाई, कालूभाई और राजूभाई सहित कई जनप्रतिनिधि और स्थानीय नागरिक उपस्थित रहे। इसके अलावा आसपास के गांवों के सरपंच, किसान और बड़ी संख्या में ग्रामीण भी कार्यक्रम में शामिल हुए।

ग्रामीणों ने इस परियोजना को क्षेत्र के लिए एक महत्वपूर्ण कदम बताते हुए सरकार का आभार व्यक्त किया। उनका कहना था कि सड़क बनने से आवागमन आसान होगा और गांवों के विकास को नई दिशा मिलेगी। स्थानीय लोगों को उम्मीद है कि आने वाले समय में इस तरह की और भी विकास परियोजनाएं शुरू की जाएंगी, जिससे पूरे क्षेत्र की प्रगति सुनिश्चित हो सके।

सूरत में जरूरतमंद बच्चों की शिक्षा के लिए नई पहल, लायंस क्लब ने बस्ती के स्कूल को लिया गोद

(जीएनएस)। सूरत। सामाजिक सेवा और शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पहल करते हुए Lions Club of Surat Athwa Lions ने जरूरतमंद बच्चों की पढ़ाई को बढ़ावा देने के लिए एक नई शुरुआत की है। क्लब ने रविवार 8 मार्च 2026 को International Women's Day के अवसर पर सचिन जीआईडीसी के पास स्थित कैलाश धाम की पिछड़ी बस्ती में एक स्कूल को गोद लिया। इस स्कूल का नाम "लायंस क्लब ऑफ सूरत अठवां लाइंस अध्यापन मंदिर" रखा गया है।

इस पहल का उद्देश्य समाज के अंतिम छोर पर रहने वाले गरीब और जरूरतमंद परिवारों के बच्चों को शिक्षा से जोड़ना है। क्लब के सदस्यों का मानना है कि शिक्षा ही वह माध्यम है जो बच्चों के भविष्य को बेहतर बना सकता है और उन्हें समाज में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान कर सकता है। इसलिए इस स्कूल के माध्यम से बच्चों को पढ़ाई के प्रति प्रेरित करने और उन्हें मुख्यधारा की शिक्षा से जोड़ने का प्रयास किया जाएगा।

कार्यक्रम के दौरान बस्ती में रहने वाले बच्चों और उनके परिवारों के साथ महिला दिवस मनाया गया। इस अवसर पर बच्चों के बीच उत्साह का माहौल देखने को मिला। बच्चों को नाश्ता कराया गया और उन्हें पढ़ाई से संबंधित आवश्यक सामग्री भी वितरित की गई। कॉपियां, पेंसिल, किताबें और अन्य शैक्षणिक सामग्री मिलने से बच्चों

में काफी खुशी दिखाई दी।

क्लब के पदाधिकारियों ने बताया कि इस स्कूल के माध्यम से बच्चों को नियमित रूप से पढ़ाया जाएगा और उन्हें आगे सरकारी स्कूलों में प्रवेश दिलाने के लिए प्रेरित किया जाएगा। कई बार आर्थिक और सामाजिक कारणों से बस्तियों में रहने वाले बच्चे शिक्षा से दूर रह जाते हैं। इस पहल का उद्देश्य ऐसे बच्चों तक शिक्षा की रोशनी पहुंचाना है।

कार्यक्रम में क्लब के प्रेसिडेंट संजय अग्रवाल ने कहा कि समाज में शिक्षा का प्रसार सबसे बड़ा सामाजिक कार्य है। उन्होंने कहा कि यदि किसी बच्चे को सही समय पर शिक्षा और मार्गदर्शन मिल जाए तो उसका पूरा जीवन बदल सकता है। उन्होंने यह भी कहा कि लायंस क्लब हमेशा से समाज सेवा के कार्यों में सक्रिय रहा है और आगे भी जरूरतमंद लोगों की सहायता के लिए इसी तरह के कार्यक्रम आयोजित करता रहेगा।

इस अवसर पर डिस्ट्रिक्ट कॉर्डिनेटर प्रमोद अग्रवाल भी उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि बस्ती के बच्चों के लिए शुरू किया गया यह अध्यापन मंदिर केवल एक स्कूल नहीं बल्कि उनके बेहतर भविष्य की नींव है। उन्होंने बताया कि क्लब का प्रयास रहेगा कि बच्चों को नियमित शिक्षा के साथ-साथ नैतिक मूल्यों और जीवन कौशल की भी जानकारी दी जाए।

कार्यक्रम में ममता अग्रवाल, रिंकी अग्रवाल और मंथन अग्रवाल सहित कई सदस्य मौजूद रहे। स्कूल की प्रिंसिपल रागिनी बेन ने भी इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के प्रयास समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद करते हैं। उन्होंने कहा कि यदि समाज के सक्षम लोग आगे आकर शिक्षा के क्षेत्र में योगदान दें तो कई बच्चों का भविष्य संवर सकता है।

इस अवसर पर ममता प्रमोद अग्रवाल ने अपने जन्मदिन के उपलक्ष्य में बच्चों के बीच केक काटकर खुशी साझा की। बच्चों ने तालियों और मुस्कान के साथ इस पल को यादगार बना दिया। ममता अग्रवाल ने कहा कि बच्चों के साथ जन्मदिन मनाना उनके लिए बेहद खास अनुभव है। उन्होंने बताया कि सेवा और समाज के लिए कुछ करने से जो संतोष मिलता है, वह किसी भी व्यक्तिगत खुशी से बड़ा होता है।

ममता अग्रवाल ने इस कार्यक्रम के माध्यम से सेवा पखवाड़ा मनाने का भी निर्णय लिया। उन्होंने कहा कि आने वाले दिनों में बस्ती के बच्चों के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वच्छता से जुड़े कई कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से बच्चों और उनके परिवारों को जागरूक किया जाएगा ताकि वे बेहतर जीवन की ओर कदम बढ़ा सकें।

कार्यक्रम का पूरा प्रायोजन ममता अग्रवाल द्वारा किया गया। उन्होंने बताया कि समाज के जरूरतमंद वर्ग की मदद करना हर व्यक्ति की जिम्मेदारी है। यदि समाज का हर सक्षम व्यक्ति थोड़ा-थोड़ा योगदान दे तो गरीब और वंचित वर्ग के जीवन में बड़ा बदलाव लाया जा सकता है।

स्थानीय लोगों ने भी इस पहल का स्वागत किया और कहा कि बस्ती के बच्चों के लिए यह एक बड़ी शुरुआत है। उनका मानना है कि शिक्षा के माध्यम से ही बच्चों का भविष्य उज्ज्वल बन सकता है और वे समाज में अपनी पहचान बना सकते हैं।

कार्यक्रम के अंत में क्लब के सदस्यों ने बच्चों को नियमित रूप से पढ़ाने और उन्हें आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस पहल के माध्यम से लायंस क्लब ने यह संदेश देने की कोशिश की है कि समाज के हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार है और उसके भविष्य को बेहतर बनाने के लिए सामूहिक प्रयास जरूरी हैं।

इंजेक्शन से शरीर में लगाए जा सकेंगे 'सैटेलाइट लिवर', लिवर रोगियों के लिए नई उम्मीद

(जीएनएस)। कैंब्रिज। लिवर से जुड़ी गंभीर बीमारियों से जूझ रहे मरीजों के लिए विज्ञान की दुनिया से एक बड़ी उम्मीद सामने आई है। वैज्ञानिकों ने ऐसे छोटे-छोटे कृत्रिम लिवर तैयार किए हैं जिन्हें शरीर में बिना ऑपरेशन के सिर्फ इंजेक्शन के जरिए डाला जा सकेगा। ये छोटे ऊतक खराब हो रहे लिवर को सहारा देकर उसके काम को बेहतर बनाने में मदद करेंगे। यह नई तकनीक भविष्य में उन लाखों मरीजों के लिए जीवनरक्षक साबित हो सकती है जो लिवर की बीमारी से पीड़ित हैं और जिनके लिए लिवर ट्रांसप्लांट ही अब तक अंतिम विकल्प माना जाता था।

अमेरिका के प्रतिष्ठित शोध संस्थान Massachusetts Institute of Technology के वैज्ञानिकों ने लिवर की कोशिकाओं के छोटे-छोटे समूह विकसित किए हैं, जिन्हें "सैटेलाइट लिवर" नाम दिया गया है। ये सूक्ष्म आकार के टिशू वास्तविक लिवर की तरह कई महत्वपूर्ण जैविक कार्य करने में सक्षम हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन मिनी लिवर को शरीर के भीतर स्थापित करने के लिए किसी बड़े ऑपरेशन या जटिल सर्जरी की जरूरत नहीं होगी। इन्हें साधारण इंजेक्शन की मदद से शरीर के अंदर पहुंचाया जा सकता है, जिससे इलाज की प्रक्रिया काफी आसान और सुरक्षित हो सकती है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह तकनीक विशेष रूप से उन मरीजों के लिए उपयोगी हो सकती है जिनका लिवर धीरे-धीरे कमजोर हो रहा है लेकिन वे बड़ी सर्जरी कराने की स्थिति में नहीं होते। ऐसे मामलों में यह सैटेलाइट लिवर एक तरह के "सपोर्ट सिस्टम" के रूप में काम कर सकते हैं और असली लिवर को अतिरिक्त सहायता प्रदान कर सकते हैं।

इन मिनी लिवर को तैयार करने के लिए वैज्ञानिकों ने तीन प्रमुख जैविक घटकों का इस्तेमाल किया है। पहला घटक है हेपेटोसाइट्स। ये वे मुख्य कोशिकाएं होती हैं जो लिवर के लगभग सभी महत्वपूर्ण कार्यों को पूरा करती हैं। शरीर से विषैले तत्वों को हटाना, प्रोटीन का निर्माण करना और कई जैविक प्रक्रियाओं को नियंत्रित करना इन कोशिकाओं का मुख्य काम होता है। दूसरा घटक फाइब्रोब्लास्ट्स नामक कोशिकाएं हैं। इनका काम संरचनात्मक सहारा देना होता है। ये कोशिकाएं ऊतकों को मजबूती प्रदान करती हैं और नई रक्त वाहिकाओं के निर्माण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। जब शरीर में नई कोशिकाएं स्थापित होती हैं तो उन्हें पोषण और ऑक्सीजन की जरूरत होती है, जिसे रक्त वाहिकाएं ही उपलब्ध कराती हैं।

तीसरा महत्वपूर्ण घटक हाइड्रोजेल बॉल्स हैं। ये छोटे-छोटे जेल जैसे गोले होते हैं जो कोशिकाओं को एक साथ जोड़े रखते हैं। इनका कार्य कोशिकाओं को स्थिर बनाए रखना और उन्हें शरीर के भीतर सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है। वैज्ञानिकों के अनुसार हाइड्रोजेल बॉल्स कोशिकाओं को इस तरह से घेर कर रखते हैं कि वे शरीर के अंदर जाकर आसानी से काम करना शुरू कर सकें।

जब इन तीनों तत्वों को मिलाकर तैयार किए गए इस मिश्रण को इंजेक्शन के जरिए शरीर के फैट यानी वसा वाले हिस्से में डाला जाता है, तो यह धीरे-धीरे वहां स्थापित हो जाता है। कुछ समय बाद शरीर की रक्त वाहिकाएं इन मिनी लिवर के साथ जुड़ने लगती हैं। इसके बाद उन्हें ऑक्सीजन और पोषण मिलने लगता है और वे वास्तविक लिवर की तरह अपना कार्य शुरू कर देते हैं।

इस तकनीक की प्रभावशीलता को जांचने के लिए वैज्ञानिकों ने प्रयोगशाला में कई परीक्षण किए। शुरुआती चरण में इन मिनी लिवर को चूहों के पेट के फैट टिशू में इंजेक्ट किया गया। परीक्षण के परिणाम काफी उत्साहजनक रहे। वैज्ञानिकों ने पाया कि ये छोटे लिवर कम से कम आठ सप्ताह तक जीवित रहे और उन्होंने वही आवश्यक प्रोटीन और एंजाइम तैयार किए जो सामान्य लिवर बनाता है।

इस सफलता ने वैज्ञानिकों को उम्मीद दी है कि भविष्य में यह तकनीक मनुष्यों के इलाज में भी कारगर साबित हो सकती है। लिवर की बीमारी दुनिया भर में एक गंभीर स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है। हर साल लाखों लोग लिवर फेल्योर, हेपेटाइटिस और अन्य लिवर संबंधी रोगों से प्रभावित होते हैं। कई मामलों में मरीजों को जीवित रहने के लिए लिवर प्रत्यारोपण की आवश्यकता होती है, लेकिन डोनर की कमी के कारण बहुत से मरीजों को समय पर लिवर नहीं मिल पाता।

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर वडोदरा मंडल द्वारा BIG FM के जरिए महिला सशक्तिकरण का संदेश

(जीएनएस)। अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल द्वारा वडोदरा रेलवे स्टेशन पर Big FM के सहयोग से "स्टूडियो शिफ्ट" का आयोजन किया गया।

इस अनूठी पहल के अंतर्गत BIG FM का रेडियो स्टूडियो अस्थायी रूप से वडोदरा रेलवे स्टेशन परिसर में स्थापित किया गया, जहाँ से कार्यक्रम का लाइव ब्रॉडकास्ट किया गया।

पश्चिम रेलवे के वडोदरा मंडल के जनसंपर्क अधिकारी श्री अनुभव सक्सेना द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार वडोदरा स्टेशन पर प्रतिष्ठित FM चैनल BIG FM के स्टूडियो शिफ्ट के अंतर्गत रेडियो जॉकी मेघा से चर्चा के दौरान वडोदरा मंडल की वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक श्रीमती रिनी सहित रेलवे के विभिन्न विभागों में कार्यरत महिला कर्मचारियों ने अपने कार्यानुभव, चुनौतियों तथा उपलब्धियों को साझा किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार वे समर्पण, साहस और प्रतिबद्धता के साथ अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए रेलवे सेवाओं को सुचारु रूप से संचालित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। उनके अनुभवों ने यह दर्शाया कि भारतीय रेल में महिलाओं की भागीदारी लगातार बढ़ रही है और वे विभिन्न क्षेत्रों में नई मिसाल कायम कर रही हैं।

स्टेशन पर उपस्थित यात्रियों और आगंतुकों ने भी इस कार्यक्रम को बड़े उत्साह से देखा और सुना, जिससे यह आयोजन जनसामान्य के लिए भी प्रेरणादायक बन गया।

यह कार्यक्रम पश्चिम रेलवे की महिला सशक्तिकरण, लैंगिक समानता और समावेशी कार्य संस्कृति के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सूरत मर्केंटाइल एसोसिएशन की बैठक में व्यापारिक चुनौतियों पर चर्चा, अध्यक्ष नरेंद्र साबू ने दिया डिजिटल व्यापार का संदेश

(जीएनएस)। सूरत। शहर के व्यापारिक संगठनों में प्रमुख स्थान रखने वाले Surat Mercantile Association (एसएमए) की 214वीं नियमित साप्ताहिक समस्या समाधान बैठक रविवार 8 मार्च 2026 को सुबह सीटी लाइट स्थित माहेश्वरी भवन में आयोजित की गई। बैठक का संचालन एसएमए प्रमुख Narendra Sabu के नेतृत्व में पंच पैनल और कोर कमेटी की टीम की अगुवाई में किया गया। इस बैठक में शहर के विभिन्न व्यापारिक क्षेत्रों से जुड़े 135 व्यापारी उपस्थित रहे और व्यापार से संबंधित समस्याओं पर विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक के दौरान व्यापारियों से प्राप्त कुल 16 आवेदन पत्रों पर सुनवाई की गई। इनमें से दो मामलों का समाधान मौके पर ही आपसी बातचीत और समझौते के माध्यम से कर दिया गया, जबकि शेष मामलों को आगे की जांच और समाधान के लिए पंच

पैनल और लीगल टीम को सौंप दिया गया। एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने बताया कि इन मामलों को निर्धारित नियमों के अनुसार प्रक्रिया में शामिल किया जाएगा और संबंधित पक्षों के साथ चर्चा कर उचित समाधान निकाला जाएगा।

बैठक में व्यापार की मौजूदा स्थिति पर भी गंभीर चर्चा हुई। व्यापारियों ने बताया कि इस वर्ष रमजान के दौरान बाजार में ग्राहकी अपेक्षाकृत कम देखी जा रही है। व्यापारियों के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में इस बार ग्राहकी लगभग 20 से 25 प्रतिशत तक कम रही है। व्यापारियों का मानना है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चल रही अस्थिर परिस्थितियों और युद्ध जैसे माहौल के कारण लोगों में उत्साह की कमी देखी जा रही है, जिसका सीधा असर बाजार की गतिविधियों पर पड़ा है।

व्यापारियों ने यह भी बताया कि 31 मार्च को समाप्त होने वाले वित्तीय वर्ष को लेकर भी कई व्यापारी चिंतित हैं। उनका अनुमान है कि पिछले वित्तीय वर्ष की तुलना में इस वर्ष कुल व्यापार में लगभग 10 से 15 प्रतिशत की गिरावट देखने को मिल सकती है। मुख्य ट्रेडिंग कारोबार से जुड़े लगभग 90 प्रतिशत व्यापारी लाभ कमाने में कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। कई व्यापारियों ने आशंका जताई कि इस वित्तीय वर्ष में बड़ी संख्या में व्यापारी मुनाफे की बैलेंस शीट बनाने में सफल नहीं हो पाएंगे।

बैठक में व्यापारियों ने रिटर्न गुड्स की समस्या को व्यापार में घाटे का प्रमुख कारण बताया। कई व्यापारियों ने कहा कि लंबे समय के बाद माल वापस लौटाए जाने से आर्थिक नुकसान होता है और व्यापारिक व्यवस्था प्रभावित होती है। इस समस्या को देखते हुए बैठक में सर्वसम्मति से एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया।

निर्णय के अनुसार अब बेचे गए माल से संबंधित शिकायत केवल 15 दिनों के भीतर ही स्वीकार की जाएगी। यदि इस अवधि के भीतर किसी प्रकार की समस्या सामने आती है तो उचित कारण बताकर माल वापस किया जा सकता है। लेकिन 15 दिन की अवधि समाप्त होने के बाद किसी भी प्रकार का रिटर्न स्वीकार नहीं किया जाएगा। इसके साथ ही यह भी तय किया गया कि यदि इसके बावजूद कोई बाहरी व्यापारी माल वापस करने का प्रयास करता है तो उसे एसोसिएशन द्वारा ब्लैकलिस्ट किया जाएगा। व्यापारियों का मानना है कि इस निर्णय से व्यापार में अनुशासन आएगा और अनावश्यक रिटर्न की समस्या काफी हद तक कम हो सकेगी।

बैठक के समापन पर एसएमए अध्यक्ष नरेंद्र साबू ने व्यापारियों को संबोधित करते हुए बदलते समय के अनुसार व्यापार की रणनीतियों में बदलाव लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि आज का दौर डिजिटल तकनीक और तेज प्रतिस्पर्धा का है, इसलिए व्यापारियों को पारंपरिक तरीकों के साथ-साथ आधुनिक तरीकों को भी अपनाना चाहिए। उन्होंने व्यापारियों को सलाह दी कि वे अपने उत्पादों को सीधे उपभोक्ताओं तक पहुंचाने की दिशा में प्रयास करें। डायरेक्ट सेल्स मॉडल अपनाने से व्यापारियों को कई समस्याओं से राहत मिल सकती है।